हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार, 12 मई 2024

9 जरूरतमंद की मदद करना भगवान की सेवा के समान

10 एमएसपी और अन्य मांगों को लेकर सड़कों पर उतरे...

■ आधा दर्जन गांवों में देर रात से ही बिजली की सप्लाई गायब

भिवानी। अंधड़ से गिरा बिजली का पोल , जंग से खत्म हुए लोहे के ऐंगल, जमीन में बनाए गए स्ट्रेक्चर पर जंग से खत्म हुआ लौहे के एंगल और बहल इलाके में अधंड़ से जमीन पर गिरा ट्रांसफार्मर।

'जंग' से खूब लड़ी लड़ाई , अंधड़ के आगे 'टूटी हिम्मत'

आंधी का कहर

■ तेज आंधी की वजह से बवानीखेड़ा के खेतों में दो बड़े टॉवर (33 हजार केवी) बिजली की लाइनों पर गिरे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी/बहल

भले ही जख्मी हालत में वर्षों निकाल दिए हो,लेकिन बीती रात आए अंधड़ ने जमीन से पांव उखाड़ दिए। देर रात आई तेज आंधी की वजह से जमीन में बने लौहे के ढांचे पर जंग की वजह से कमजोर हुए दो टॉवर गिर गए। दोनों टॉवर बवानीखेड़ा पॉवर हाऊस से आने वाली लाइन पर गिरे। जिसकी वजह से आधा दर्जन गांवों में देर रात से ही बिजली की सप्लाई गायब हो गई। जो टॉवर गिरे है। उनके जमीन पर बने सीमेंट व लौहे के ढांचे पर जंग का जबरदस्त असर था। एक तरफ से जंग द्वारा खतम किए जाने के बाद पूरा टॉवर एक झटके के साथ जमीन पर गिरा। जिसकी वजह से लाइट की सप्लाई पूरी तरह से बाधित हो गई। समाचार लिखे जाने तक टॉवर उठाने का कार्य शुरू नहीं हो पाया था। बिजली की सप्लाई न आने से गांवों में पीने के पानी की सप्लाई भी नहीं दी जा सकी। जानकारी के अनुसार बीती रात करीब पौने नौ बजे के आसपास हलकी बूंदाबांदी के साथ अंधड़ ने तेजी पकड़ी। करीब दो घंटे तक कभी तेज तो कभी धीमी गति से अंधड़ चली। तेज हवा की वजह से बवानीखेड़ा के खेतों में दो बड़े

तोशाम। अंधड़ से टूटे पोल का दृश्य। फोटो : हरिभूमि

टॉवर(33 हजार केवी) बिजली की लाइनों पर गिर गए। जिसकी वजह से बवानीखेड़ा से आगे के गांवों की बिजली की सप्लाई पूरी तरह से ठप्प हो गई। रात को ही विद्युत निगम के कर्मचारियों ने बिजली में आए फाल्ट को दुरुस्त करने का प्रयास किया,लेकिन बात नहीं बनी। शनिवार पूरे दिन निगम की टीम बिजली की सप्लाई बहाल करने में जुटी रही। बवानीखेड़ा कस्बे में दोपहर बाद बिजली की सप्लाई बहाल हो गई,लेकिन आसपास के गांवों में देर शाम तक बिजली की सप्लाई चालू नहीं हो पाई थी।

भले ही सुनने थोड़ा सा अटपटा लगता हो,लेकिन यह सौ फीसदी सही है। बवानीखेड़ा के खेतों में जो टॉवर अंधड़ में गिरे है। उन टॉवरों के दो-दो लौहे के एंगलों को ढांचे में से जंग ने खतम कर रखा था। जैसे ही तेज अंधड़ आया और तार हवा के साथ हिलने लगे तो टॉवर हिलने का झटका नहीं सह पाया। जो दो एंगल जंग की चपेट में थे वे टूट गए और दो ऐंगल मुड़कर जमीन पर गिर गए। गनीमत यह रही कि जिस वक्त यह हादसा हुआ। उस वक्त बड़ी लाइन के पास कोई व्यक्ति या वाहन नहीं था। टॉवर गांवों को दी जाने वाली सप्लाई लाइन पर गिरा। जिसकी वजह से बवानीखेड़ा पॉवर हाऊस के नीचे आने वाले आधा दर्जन गांवों की बिजली की सप्लाई बाधित हो गई।

बहल में 160 पोल गिरे

तेज आंधी से बहल क्षेत्र में खूब तबाही मची। आंधी से बहल क्षेत्र के विभिन्न गांवों में करीब 160 पोल गिर कर टूट गए, जिससे बिजली निगम को भारी नुकसान हुआ। वही, सडक़ किनारे व खेतों में खड़े सैंकड़ों पेड़ तेज हवा के कारण जमीन पर जा गिरे। आंधी से बिजली, पानी व्यवस्था चरमरा गई। शनिवार दोपहर तक बहल क्षेत्र के गांव सुधीवास, पातवान व गरवा में बिजली सप्लाई बाधित रही।

शुक्रवार दोपहर बाद आई आंधी के कारण बहल क्षेत्र से निकलने वाले अनेक मार्ग पेड़ टूटकर कर गिरने से बाधित हो गए। लोहारू, भिवानी, झुंपा सहित अन्य मार्ग पर जगह जगह पर सड़क हवा के वेग को झेल नहीं पाए और बीच सड़क पर जा गिरे। देर रात्रि तक कई बहल से विभिन्न स्थानों पर जाने वाले वाहन चालकों को अपने वाहन दूसरे रास्तों से ले जाने पड़े। हालांकि, देर शाम तक अधिकतर सड़क मार्गों से पेड़ हटाकर उनको साफ कर दिया था पर फिर भी कुछ जगहों पर पेड़ों की वजह से मार्ग अवरूद्ध रहा। वहीं, आंधी से खेतों में भी नुकसान हुआ। आंधी से अनेकों पेड़ जमीन पर जा गिरे जिससे वन संपदा का नुकसान हुआ है। शुक्त्रवार को अक्षय तृतीय के शुभ मुहूर्त पर जिन घरों में शादी समारोह था, उनको भी आंधी, तेज तूफान से भारी परेशानी हुई। जिन लोगों ने खुले में आसमान लगा रखा था, उनको व्यवस्था में कड़ी मशक्कत करनी पड़ी।

आंधी से बिजली निगम के पोलों व ट्रांसफारमर का नुकसान हुआ है। बहल क्षेत्र के करीब 100 पोल टूट गए। सुधीवास एपी का एच पोल पर लगा एक ट्रांसफारमर जमीन पर जा गिरा। बिजली निगम कर्मचारी शुक्रवार शाम के बाद शनिवार दोपहर तक लाइन को दुरस्त करने में लगे रहे। लेकिनए सुधीवासए पातवान व गरवा की बिजली व्यवस्था अभी भी सुचारू नहीं हो सकी थी। बिजली निगम के एसडीओ ऋषभ कुमार ने बताया कि आंधी से बहल क्षेत्र में सैंकड़ों पोल टूट गए जिससे बिजली निगम को लाखों का नुकसान हुआ है।

तोशाम क्षेत्र में बिजली के 53 पोल टूटे

शुक्रवार शाम व रात्रि के दौरान आए तेज अंधड़ के कारण क्षेत्र के कई स्थानों पर बिजली की लाइनों के खंभे भी क्षतिग्रस्त हुए हैं। जिससे क्षेत्र के गांव मंढ़ाण, संडवा, पटौदी आदि कई गांवों की बिजली व्यवस्था भी काफी समय तक प्रभावित रही। आंधी आने पर कई स्थानों पर बिजली की लाइनों के खंभे टूटने के कारण शनिवार को लाइनें चालू नहीं हो पाई साथ ही विभाग को खंभे टूटने के कारण हजारों रुपए का नुकसान भी हुआ है। विभाग ने रात को ही लाइनों को ठीक करने के लिए कर्मचारियों को लगा दिया था। शनिवार सायं तक गांव की बिजली आपूर्ति बहाल कर दी गई थी। लेकिन कुछ खेतों के ट्यूबवेल की बिजली आपूर्ति बहाल नहीं हो पाई है। एसडीओ चेतन सिंह ने बताया कि क्षेत्र में 53 पोल आंधी के कारण टूट गए है। बिजली आपूर्ति के लिए कर्मचारी लगे हुए है और शनिवार सायं तक गांव की बिजली आपूर्ति बहाल कर दी जाएगी।

जाम में फंसे वाहन

हाईवोल्टेज लाइन का तार टूटकर जमीन पर गिरा, करंट से किशोर की मौत, 2 झुलसे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

मकड़ानी के समीप 11 हजार हाई वोल्टेज बिलजी लाइन का तार टूटकर कच्चे रास्ते में गिर गया। तार की चपेट में आने के बाद करंट लगने से बाइक सवार किशोर की मौत हो गई और दो बुरी तरह झुलस गए। हादसे से गुस्साए ग्रामीणों ने बिजली निगम के खिलाफ प्रदर्शन किया था नेशनल हाईवे 152डी पर जाम लगा दिया। शुक्रवार शाम को तेज अंधड़ के कारण हाई वोल्टेज बिलजी लाइन का तार टूटकर कच्चे रास्ते में गिर गया। इसी कच्चे रास्ते से मकड़ाना निवासी रामवीर अपने बेटे अंशु 17 और फूल कुमार के साथ बाइक पर जा रहा था। हाई वोल्टेज बिजली लाइन का टूटा तार उसकी बाइक में उलझ गया और करंट का झटका लगा। हादसे में 17 वर्षीय अंशु की करंट लगने से मौके पर ही मौत हो गई और रामवीर और फूल कुमार झुलस गए। हादसे की सूचना मिलने के बाद सैकड़ों ग्रामीण घटना स्थल पर पहुंच गए और निगम कार्यालय में फोन कर लाइन की बिजली आपूर्ति बंद करवाई। शनिवार सुबह गुस्साए ग्रामीणों ने शव उठाने से मना कर दिया और नेशनल हाईवे 152डी पर जाम लगा दिया। हाइवे जाम होने के कारण हजारों वाहन फंस गए और लंबा जाम लग गया। ग्रामीणों ने कहा कि बिजली निगम के कर्मचारियों के लापरवाही से हादसा हुआ है। निगम कर्मचारियों ने मौके पर पहुंचकर ग्रामीणों से बातचीत और जाम खुलवाया। ग्रामीणों ने बताया कि सूचना देने के बाद भी बिजली आपूर्ति बंद नहीं की और ना ही तार को ठीक किया गया। ग्रामीणों ने कहा कि हादसा निगम की लापरवाही के कारण हुआ है। मृतक के परिजनों को मुआवजा मिलना चाहिए।

खबर संक्षेप

बाबा न्यारमदास मंदिर में कार्यक्रम 13 से

चरखी दादरी। बाबा न्यारमदास मंदिर सिरसली धाम पर 13 मई की रात्रि जागरण किया जाएगा। जागरण में प्रसिद्ध कलाकार प्रस्तुति देकर भक्तों को मंत्रमुग्ध करेंगे। पूर्व सरपंच सुदर्शन ने बताया कि 14 मई को बाबा न्यारमदास की पूजा अर्चना के साथ जनकल्याण के लिए सुबह 8 बजे हवन किया जाएगा। प्रातः 10 बजे से भंडारे का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम धाम पर गद्दीनसीन संत दिनेश दास के सानिध्य में होगा। इसमें पांच गांव कमोद, खातीवास, रावलधी, जयश्री व मिर्च के ग्रामीणों सहित सिरसली धाम मंदिर कमेटी का सहयोग रहेगा।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर आज

भिवानी। दादरी गेट न्यू हाऊसिंग बोर्ड स्थित रेस्तरां में भिवानी केसरी स्वर्गीय सेठ भगीरथमल बुवानीवाला की पुण्य स्मृति में अग्रवाल वैश्य समाज 12 मई को निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जाएगा। समाज के उमेश बंसल, आशीष एडवोकेट व मनीष तायल ने कहा कि समाज का उद्देश्य है कि ज्यादा से ज्यादा जरूरतमंद लोगों को विशाल निःशुल्क चिकित्सा शिविर का लाभ मिले। उन्होंने बताया कि शिविर में डॉ. नितेश गोयल, डॉ. मोनिका अग्रवाल, डॉ. आयुष अग्रवाल, डॉ. सौरभ जैन, डॉ. एलबी गुप्ता, डॉ. राहुल गोयल, डॉ. साक्षी सिंगला आदि विशेषज्ञ चिकित्सक अपनी सेवाएं देंगे।

पुत्री की गुमशुदगी पर पिता की शिकायत पर केस दर्ज

भिवानी। कस्बे में पुत्री की गुमशुदगी होने पर पिता ने पुलिस में शिकायत देकर मामला दर्ज करवाया है। पुलिस में दी शिकायत में पिता ने बताया कि उसकी 18 वर्षीय पुत्री 7 मई को बिना बताए कहीं चली गई जिसको ढूंढने का हर संभव प्रयास किया लेकिन उसका कहीं पता नहीं चला। पुलिस ने पिता की शिकायत पर गुमशुदगी का मामला दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है।

मतदाताओं की सहूलियत के लिए क्यू मैनेजमेंट एप का ट्रायल रन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

■ 25 मई को मिलेगी रियल टाइम इनफॉर्मेशन

मतदाताओं को लोकसभा आम चुनाव 2024 के दौरान मतदान करते समय किसी भी प्रकार की परेशानी ना हो इसके लिए इस बार भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मतदान केंद्रों पर खास इंतजाम किए जा रहे हैं। इसके अलावा बीएलओ के माध्यम से मतदाताओं को वोटर इनफॉरमेशन स्लिप के साथ मत करने के लिए न्योता निमंत्रण भी दिया जाएगा। यह जानकारी देते हुए जिला निर्वाचन अधिकारी नरेश नरवाल ने बताया कि निमंत्रण पत्र के साथ.साथ मतदाताओं को उनके बूथ के बारे में भी सही जानकारी दी जाएगी है। जिला के सभी बीएलओ घर.घर जाकर वोटर इनफॉरमेशन स्लिप देंगे। इसके अलावा मतदाता वोटर हेल्पलाइन तथा टोल फ्री नंबर 1950 पर भी इसकी जानकारी ले सकते हैं।

उन्होंने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देश अनुसार प्रत्येक मतदान केंद्र पर मूलभूत सुविधाओं पर भी विशेष फोकस किया जा रहा है। हर मतदान केंद्र पर पेयजल, शौचालय तथा छाया में बैठने के इंतजाम किए गए हैं ताकि मतदाता को धूप में ना खड़ा होना पड़े। इस संबंध में सभी एआरओ अपने.अपने क्षेत्र में मतदान केंद्रों पर न्यूनतम सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए जिम्मेदार रहेंगे। इस बार जिला के सभी विधानसभा क्षेत्र के सभी बूथ पर लाइन में लगे मतदाताओं की जानकारी ऑनलाइन मुहैया रहेगी। इसके लिए क्यू मैनेजमेंट ऐप बनाया गया है। क्यू मैनेजमेंट ऐप का ट्रायल रन लिया जाएगा। ऐप के लिए सभी बीएलओ के नंबर अपडेट किए जा रहे हैं।

फोन नंबर हो चुके अपडेट

मोबाइल नंबर अपडेट करने का कार्य पूरा कर लिया गया हे । मतदान के दिन 25 मई को कोई भी नागरिक ये ऐप डाउनलोड करके लाइन में लगे मतदाताओं की संख्या की जानकारी हासिल कर सकता है। उन्होंने बताया कि मतदान केंद्र पर तैनात सभी बीएलओ लगातार क्यू मैनेजमेंट ऐप के जरिए डाटा अपडेट करेंगे ताकि लोगों को लाइन में लगे मतदाताओं की रियल टाइम इन्फॉर्मेशन मिलती रहे।

नवदंपति ने ली जल एवं पर्यावरण संरक्षण की शपथ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

परिणय सूत्र में बंधने के बाद नवदंपत्ति के जीवन के नए पड़ाव की शुरूआत होती है और नए जीवन की शुरूआत जल एवं पर्यावरण संरक्षण के संकल्प के साथ हो तो आने वाली पीढ़ियों को विरासत में स्वच्छ हवा एवं जल का तोहफा मिल सके। जल एवं पर्यावरण संरक्षण की मुहिम के साथ युवा जागृति एवं जनकल्याण मिशन ट्रस्ट ने नवदंपत्ति हिमांशु व दीप्ति को हनुमान जोहड़ी मंदिर में जल एवं पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलवाई। कार्यक्रम में बालयोगी महंत चरणदास महाराज का सान्निध्य रहा। इस मौके पर नवदंपत्ति ने कहा कि कार्यक्रम के माध्यम से उन्हें जल एवं पर्यावरण का महत्व समझ आया है तथा अब से वे भी इस दिशा में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाएंगे तथा अन्य लोगों को भी प्रेरित करेंगे। महंत चरणदास ने कहा कि गर्मी के मौसम में पेयजल की किल्लत बढ़ जाती है, ऐसे में हमें भी इस बात को समझना होगा तथा जल को व्यर्थ बहने से बचाना होगा, ताकि आज जल को व्यर्थ बहने से रोककर ही हम भविष्य के लिए जल को बचा सकते है।

■ व्यर्थ बहने से रोककर ही भविष्य के लिए बच सकता पानी : चरणदास

भिवानी। नवदंपति को जल एवं पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाते महंत चरणदास। फोटो : हरिभूमि

अंचल अस्पताल में हवन, रक्तदान शिविर और गीता पाठ आज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

श्रीकृष्ण कृपा जीयो गीता सेवा समिति एवं भिवानी जीयो चिकित्सा प्रकोष्ठ द्वारा 12 मई को दिनोद गेट स्थित अंचल अस्पताल में हवन एवं गीता पाठ का आयोजन किया जाएगा। जीओ चिकित्सा प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. विनोद अंचल ने बताया कि सेवा सद्भावना दिवस के उपलक्ष्य में गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज की प्रेरणा से 12 मई को प्रातः साढ़े 8 बजे हवन का आयोजन किया जाएगा। प्रातः साढ़े 9 बजे से रैडक्रॉस सोसायटी के सहयोग से रक्तदान एवं निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जाएगा।

शिविर में निःशुल्क रक्तदान, जांच, ईसीजी, एक्स-रे एवं अल्ट्रासाऊंड किए जाएंगे। इस दौरान डॉ. राजेश गोदार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. विनोद अंचल, डॉ. अनीता अंचल, डॉ. प्रिया, डॉ. ओपी यादव, डॉ. वेदप्रकाश अग्रवाल, डॉ. आरबी गोयल आदि जांच करेंगे।

रक्तदान एवं निः शुल्क चिकित्सा शिविर आज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

■ कार्यक्रम में चौधरी बंसीलाल यूनिवर्सिटी की वीसी दीप्ति धर्मानी व हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ. वीपी यादव मुख्य अतिथि होंगे

श्री कृष्ण कृपा जीओ गीता सेवा समिति एवं चिकित्सा प्रकोष्ठ द्वारा आज 12 मई को दिनोद गेट स्थित अंचल अस्पताल में गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज के जन्मदिवस के अवसर पर हवन एवं गीता पाठ का आयोजन किया जाएगा। इस दिवस को सद्भाव दिवस के रूप में मनाया जायेगा।

कार्यक्रम में रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा साथ ही समाज में प्रमुख कार्य करने वाले समजसेवियो को सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम में चौधरी बंसीलाल यूनिवर्सिटी की वीसी दीप्ति धर्मानी व हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ. वीपी यादव मुख्य अतिथि होंगे। वही कार्यक्रम में भिवानी के सीएमओ डॉ. रघुबीर शांडिल्य विशिष्ट अतिथि होंगे। यह जानकारी देते हुए जीओ चिकित्सा प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. विनोद अंचल ने बताया कि सेवा सद्भावना दिवस के उपलक्ष्य में गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद की प्रेरणा से 12 मई को प्रातः साढ़े 8 बजे हवन हवन का आयोजन किया जाएगा। इसके उपरांत प्रातः साढ़े 9 बजे से रैडक्रॉस सोसायटी के सहयोग से रक्तदान एवं निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि निरूशुल्क चिकित्सा शिविर में निरूशुल्क रक्तदान जांचए ईसीजीए एक्स.रे एवं अल्ट्रासाऊंड किए जाएंगे। कार्यक्रम में वरिष्ठ डॉक्टर का पैनल निःशुल्क कैम्प भी लगायेंगे।

व्यापारी से 45 लाख रुपये की लूट की वारदात कबूली

लूटपाट मामले में छह दबोचे, 13 लाख बरामद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

■ दिल्ली के गफ्फार मार्केट जाने व आने वाले व्यापारी रहते थे टॉरगेट पर

पुलिस की सीआईए स्टाफ टीम ने हाईवे पर व्यापारियों को लूटने वाले गिरोह के छह आरोपियों को पकड़ा है। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 25 अप्रैल को भूषण निवासी रामगंज मोहल्ला भिवानी से नौरंगाबाद टोल के पास दो गाड़ी में सवार व्यक्तियों ने शिकायतकर्ता की गाड़ी के आगे गाड़ी लगाकर लाठी डंडों से हमला कर पिस्टल पॉइंट पर मोबाइल फोन में लाखों रुपये लूटकर ले गए थे। जो शिकायतकर्ता के द्वारा दी गई शिकायत पर पुलिस ने थाना सदर भिवानी में दर्ज किया था। सीआईए स्टाफ प्रथम भिवानी के उप निरीक्षक सतीश कुमार ने मोबाइल फोन व्यापारी से पिस्टल पॉइंट पर लाखों की लूट करने के मामले में 06 आरोपियों को मुढाल क्षेत्र से गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आरोपितों ने व्यापारी से 45 लाख लूटने की वारदात कबूली है। आरोपियों की पहचान आनंद निवासी लोको प्राइवेट कॉलोनी जिला जींद, प्रदीप निवासी ईटल कला जिला जींद, जयपाल निवासी ईटल कला जिला जींद, प्रताप निवासी रूपनगर, बरसाना,मथुरा उत्तर प्रदेश, हरबीर निवासी आदर्श कॉलोनी वार्ड नंबर. 17 होडल पलवल व हर्ष निवासी दयालबाग कॉलोनी जींद के रूप में हुई है। जांच इकाई के द्वारा आरोपी आनंद, प्रदीप, जयपाल, प्रताप व हरबीर को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश कर 05 दिन के पुलिस रिमांड पर हासिल किया गया था। वहीं जांच इकाई के द्वारा छठे आरोपी हर्ष को नौ मई को गिरफ्तार किया गया था। पुलिस टीम के द्वारा आरोपियों से 1310000 रुपये वारदात में प्रयोग की गई वरना गाड़ी, दो अवैध देसी कट्टे, दो कारतूस, दो डंडे, वारदात में प्रयोग की गई बाइक व शिकायतकर्ता का लूटा हुआ फोन बरामद किया है। जांच इकाई के द्वारा पूछताछ करने पर आरोपी आनंद ने बतलाया कि वह टैक्सी ड्राइवर का काम करता है और उसके साथी दिल्ली गफ्फार मार्केट में आने वाले व्यापारियों को टारगेट किया करते थे।

गांव कलियाणा के पंचायत घर में आंखों का जांच शिविर आज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

■ आंखों की बीमारियों काला मोतिया, सफेद मोतिया, भेंगापन, नासूर, पढ़वाल, शुगर व ब्लड प्रेशर के मरीजों की जांच की जाएगी

चरखी दादरी जिले के कलियाणा के पंचायत घर में 12 मई रविवार को डॉ. पवन धीर चैरिटेबल इंस्टीट्यूट द्वारा सुबह 10 से 1 बजे तक आंखों का जांच शिविर लगाया जाएगा, जिसमें आंखों की बीमारियों काला मोतिया, सफेद मोतिया, भेंगापन, नासूर, पढ़वाल, शुगर व ब्लड प्रेशर के मरीजों की आंखों की जांच की जाएगी तथा दवाइयां फ्री दी जाएगी।

डॉ. चंचल धीर ने बताया कि जिन मरीजों को ऑपरेशन की जरूरत होगी, उनका ऑपरेशन लैंस डालकर लेजर विधि से लोहारू रोड स्थित धीर आंखों का सेंटर चरखी दादरी में रियायती दरों पर किया जाएगा। उन्होंने कहा कि समय पर इलाज करने से आंखों की रोशनी खराब नहीं होती, समय पर इलाज नहीं होने से अनेक मरीज अपनी आंखों की अनमोल रोशनी हमेशा के लिए गवां देते हैं, इसलिए गांव में ये स्क्रीनिंग शिविर लगाया जा रहा है।

दमदार रिटर्न दे रहा ईटीएफ निवेश की बनाएं रणनीति

मार्च 2024 में ईटीएएफ में निवेश 10,500 करोड़ रुपये की नई ऊंचाई पर पहुंच गया। इसके पहले औसतन हर महीने 2,500 करोड़ रुपये का ही निवेश ईटीएएफ में होता था। बाजार में ईटीएएफ से जुड़े न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) भी आ रहे हैं। ईटीएएफ में रिटर्न देखकर निवेशक आने लगे तो फंड हाउस भी एनएफओ लाने लगे हैं। भविष्य में ईटीएएफ निवेश का अच्छा माध्यम बन सकता है।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

रिटेल निवेशकों का मार्च 2024 में म्यूचुअल फंडों की स्मॉल-कैप स्कीम्स में निवेश कम हुआ है। वे लार्ज-कैप और एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएएफ) जैसे ऑप्शंस को तरजीह दे रहे हैं। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड इन इंडिया (एएमएफआई) के ताजा आंकड़ों से ये जानकारी सामने आई है। मार्च 2024 में ईटीएएफ में निवेश 10,500 करोड़ रुपये की नई ऊंचाई पर पहुंच गया। इसके पहले औसतन हर महीने 2,500 करोड़ रुपये का ही निवेश ईटीएएफ में होता था। बाजार में ईटीएएफ से जुड़े न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) भी आ रहे हैं। म्यूचुअल फंड एक्सपर्ट्स का कहना है कि होटल वाले वही खाना पेश करते हैं, जिसकी डिमांड होती है। जब ईटीएएफ में रिटर्न देखकर निवेशक आने लगे तो फंड हाउस भी एनएफओ लाने लगे हैं। ऐसे में निवेशकों का रुझान भी ईटीएएफ की तरफ बढ़ने लगा है। लेकिन ईटीएएफ में निवेश के लिए एक बेहतरीन रणनीति बनाई जानी चाहिए। इसके बाद ही ईटीएएफ में निवेश करना चाहिए। इससे निवेशकों को कम समय में ही बढ़िया रिटर्न मिलेगा और वे जल्द मालामाल हो सकते हैं।

पिछले एक साल में कम से कम छह ईटीएएफ ने 80 प्रतिशत से अधिक का रिटर्न दिया है। टॉप मोस्ट राइजिंग फंड में लगभग 110 प्रतिशत की ग्रोथ हुई।

स्टॉक की तरह होता है कारोबार

ईटीएएफ मतलब एक्सचेंज ट्रेडेड फंड का शेयर बाजार में आम स्टॉक की तरह कारोबार होता है। पिछले एक साल में कम से कम छह ईटीएएफ ने 80 प्रतिशत से अधिक का रिटर्न दिया है। टॉप मोस्ट राइजिंग फंड में लगभग 110 प्रतिशत की ग्रोथ हुई है। इनमें वे टॉप पर हैं, जो सरकारी कंपनियों में निवेश करते हैं। मतलब वे निफ्टी पीएसयू या पीएसई में निवेश करते हैं। ऐसे में रिटेल निवेशक इन पर टूट पड़े हैं। रिटेल निवेशकों के लिए जरूरी है कि पहले वे ईटीएएफ के फायदे-नुकसान को समझें और बाद में निवेश करें।

अंतर समझना जरूरी

पीएसयू इक्विटी म्यूचुअल फंड और पीएसयू ईटीएएफ के बीच का अंतर समझें। ईटीएएफ में कई बार बाय-सेल में प्राइस डिफरेंस पे करना होता है। कुछ एक्सपर्ट्स का कहना है कि कुछ मामलों में लिक्विडिटी से लेकर सट्टा किस्म की जोखिम और जटिलताएं भी ईटीएएफ से जुड़ी हैं।

क्या है पीएसई-ईटीएफ

निफ्टी पीएसई इंडेक्स में वे कंपनियां शामिल हैं जिनकी आउटस्टेंडिंग शेयर कैपिटल का 51% प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से केंद्र सरकार और/या राज्य सरकार के पास है। इसमें 20 स्टॉक्स हैं। बाजार के जानकारों का कहना है कि इस साल यह निवेशकों को अच्छा रिटर्न दे सकता है। ईटीएएफ मतलब एक्सचेंज ट्रेडेड फंड, जो इंडेक्स, कमोडिटी, बॉन्ड्स जैसे असेट को ट्रेक करते हैं। सरल शब्दों में कहें तो ईटीएएफ वे फंड हैं जो सीएनएक्स निफ्टी या बीएसई सेंसेक्स जैसे इंडेक्स को ट्रैक करते हैं। जब आप ईटीएएफ के शेयर/यूनिट खरीदते हैं, तो आप एक पोर्टफोलियो के शेयर/यूनिट खरीद रहे हैं जो इसके नेटिव इंडेक्स की यील्ड और रिटर्न को ट्रैक करता है।

ईटीएफ मार्केट में चैलेंज

सर्वे के नतीजे बताते हैं कि लिक्विडिटी, मार्केट मूवमेंट और नए आइडिया पर आधारित प्रोडक्ट बड़े फैक्टर हैं, जो ईटीएफ मार्केट को चला रहे हैं, जबकि हिडन रिस्क और कम जानकारी ईटीएफ मार्केट के लिए बड़ी बाधाएं हैं, जिन पर म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री को ध्यान देने की जरूरत है। 'डिकोडिंग ईटीएफ परसेप्शन' शीर्षक से 15 शहरों में रह रहे 2109 निवेशकों के बीच किए गए इस सर्वे में महानगरों के साथ-साथ टियर 2 शहर भी शामिल हैं, जिसमें दिलचस्प नतीजे सामने आए हैं।

छोटे शहरों में बढ़ रहा क्रेज

म्यूचुअल फंड्स की ईटीएफ स्कीम्स को लेकर छोटे शहरों खासकर टियर 2 शहरों में तेजी से क्रेज बढ़ रहा है। 36-45 साल के निवेशकों के बीच इनकी डिमांड बढ़ रही। अलग-अलग मार्केट कैप प्रोडक्ट्स में लार्ज कैप और मिड कैप आधारित ईटीएफ की लोकप्रियता निवेशकों और निवेश की इच्छा रखने वाले लोगों के बीच ज्यादा है।

क्या है अंतर?

ईटीएएफ और अन्य प्रकार के इंडेक्स फंड के बीच मुख्य अंतर यह है कि ईटीएएफ अपने संबंधित इंडेक्स से बेहतर प्रदर्शन करने की कोशिश नहीं करते हैं, बल्कि केवल इंडेक्स के प्रदर्शन को दोहराते हैं। ईटीएएफ पैसिवली मैनेज्ड होते हैं। इसका उद्देश्य एक विशेष मार्केट इंडेक्स से मेल खाना है, इसलिए इसका फंड मैनेजमेंट स्टाइल पैसिव होता है।

एक्टिव एमएफ एमएफ से अलग कैसे

शेयर बाजार में ट्रेडिंग के चलते इसे खरीदना और बेचना अपेक्षाकृत आसान है। इसमें निवेश के लिए आपको म्यूचुअल फंड के डिस्ट्रिब्यूटर के पास जाने की जरूरत नहीं पड़ती। म्यूचुअल फंड की आम स्कीमों में अपनी यूनिट्स बेचने के लिए भी आपको म्यूचुअल फंड कंपनी के पास जाना पड़ता है। शेयर बाजार में खरीद-फरीख्त होने से इसकी कीमत रियल टाइम होती है। ईटीएफ खरीदने के लिए आपको अपने ब्रोकर के माध्यम से डीमैट अकाउंट खोलना होता है। इसके माध्यम से आप खरीद फरोख्त कर सकते हैं। यह बात म्यूचुअल फंड स्कीम में लागू नहीं होती।

अब 30 की उम्र वालों के लिए सुपरहिट प्लान

- इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में निवेश करें, 30 साल तक छोड़ दें, हर माह 3000 रुपये लगाने पर मिलेंगे 4.50 करोड़।
- इसमें 3.91 करोड़ रुपये तो सिर्फ ब्याज से ही मिलेंगे, रोजाना 100 रुपये बचाकर भी कर सकते हैं निवेश।
- रिटायरमेंट प्लानिंग भी बेहतर होगी।

बचत
बिजनेस डेस्क

अक्सर माना जाता है कि आदमी जितनी जल्दी निवेश शुरू करेगा, उतनी ही जल्दी अमीर बन जाएगा। यह बात काफी हद तक सच भी है। इसलिए सबको चाहिए कि वे जितनी जल्दी हो सके निवेश शुरू कर दें। इससे आपके पास अच्छा पैसा होगा और रिटायरमेंट भी बेहतर बनेगी। लेकिन, ये कोई नियम नहीं। निवेश में देर होती है, लेकिन अगर स्ट्रैटेजी सही है तो पैसा तो तब भी बनाया जा सकता है। अब देश में 30 साल की उम्र वालों के लिए भी म्युचुअल फंड में एसआईपी के कई बेहतरीन प्लान मौजूद हैं। इसमें बड़े निवेश की भी जरूरत नहीं है। बस आपको रोजाना 100 रुपये बचाने हैं। महीने के 3000 रुपये इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में लगाएं 30 साल के लिए छोड़ दें। इससे आपकी रिटायरमेंट प्लानिंग भी हो जाएगी। 30 साल बाद आपके पास 4.17 करोड़ रुपये होंगे। ये तो कुछ भी नहीं। रिटर्न की ऐसी ताबड़तोड़ बारिश होगी कि सिर्फ 3.58 करोड़ रुपये सिर्फ ब्याज से कमाई होगी।

ऐसे करती है काम

आप भी अच्छा रिटर्न प्राप्त करना चाहते हैं तो इक्विटी मार्केट में पैसा लगा सकते हैं। आप पैसा बनाना चाहते हैं तो लॉन्ग टर्म स्ट्रैटेजी सबसे सटीक काम करती है। अपनी इनकम से जरूरी खर्चे निकाल दें और उसके बाद सिर्फ 100 रुपये की रोजाना बचत करें। इस बचत से हर महीने निवेश करना है। सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) आपके पैसे को सही दिशा देगा और रिटर्न आपके पैसे को बढ़ाता चला जाएगा। इन्वेस्टमेंट एडवाइजर के मुताबिक, अगर बड़ा फंड चाहिए तो इक्विटी म्यूचुअल फंड्स अच्छा ऑप्शन हो सकता है। निवेशक 30 की उम्र में अपना पहला निवेश 3000 रुपये से करता है और 30 साल तक नियमित निवेश में करे तो बड़ा फंड तैयार होगा। इक्विटी म्यूचुअल फंड के सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) में निवेश करना फायदेमंद है।

कम्पाउंडिंग का मिलता है फायदा

एडवाइजर की मानें तो म्यूचुअल फंड में 30 साल के लिए निवेश करना है। इसमें अनुमानित 15% का रिटर्न मिलता है तो करोड़पति बनने की राह आसान हो जाती है। सबसे बड़ा फायदा इसमें कम्पाउंडिंग का मिलता है। मतलब 30 साल में 15% के साथ कम्पाउंड इंट्रस्ट का भी फायदा मिलेगा, लेकिन, इससे भी जरूरी है सबसे सटीक फॉर्मूला, जो एसआईपी में चार चांद लगा देगा। ये फॉर्मूला स्टेप अप एसआईपी का है। आपको बस हर साल 10% का स्टेप-अप रेट रखना है।

10% स्टेप-अप से बनेगा 4.50 करोड़ का कॉर्पस

आप 30 साल के हैं. रोजाना 100 रुपये बचाकर एसआईपी में निवेश किया है। 30 साल के लिए लॉन्ग टर्म स्ट्रैटेजी का लक्ष्य रखा। हर साल 10% स्टेप-अप करते रहे। 3000 रुपये से शुरुआत की तो अगले साल 300 रुपये बढ़ाने होंगे। 30 साल बाद आपके पास 4,50,66,809 रुपये मैच्योरिटी अमाउंट होगा। एसआईपी कैलकुलेटर के हिसाब से 30 साल में आपका कुल निवेश 59,21,785 रुपये होगा, लेकिन, यहां सिर्फ रिटर्न से 3 करोड़ 91 लाख 45 हजार 025 रुपये का फायदा होगा। एसआईपी में ये ही रिटर्न का जादू है। इस तरह सबसे सटीक फॉर्मूला स्टेप-अप की मदद से आपके पास 4 करोड़ 50 लाख रुपये का बड़ा फंड तैयार होगा।

28 साल में भी बन सकते हैं करोड़पति

आप 28 साल में ही करोड़पति बन सकते हैं बशर्ते आपका म्यूचुअल फंड आपको 13 प्रतिशत का रिटर्न दे। इस रिटर्न के हिसाब से आपकी संपत्ति 28 साल के बाद 10,176,162 रुपये होगी।

म्यूचुअल फंड पर कितना मिलता है रिटर्न

ज्यादातर विशेषज्ञों के मुताबिक एसआईपी के जरिए आप औसतन 12 प्रतिशत तक का ब्याज पा सकते हैं और कभी-कभी यह ब्याज दर बाजार के रही तेजी के कारण 15 और 20 फीसदी तक भी पहुंच सकती है या मंदी के कारण कम भी हो सकती है। आपको ब्याज संचय से लाभ होता है, और आप एसआईपी से आसानी से अपनी संपत्ति को बढ़ा सकते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार आप जितने लंबे समय तक एसआईपी के जरिए निवेश करेंगें आपका लाभ उतना ही अधिक होगा।

नौकरी लगते ही निवेश के चक्कर में न पड़ें, कुछ समय खुद पर निवेश करें

नई स्किल्स सीखें और घूमें और खुद की वैल्यू को बढ़ाएं, स्किल के दम पर अपनी सैलरी 3-4 गुना तक बढ़ा पाएंगे, इससे आप कुछ समय बाद बड़ा अमाउंट निवेश पाएंगे, 15 लाख के बजाय बना पाएंगे 1.5 करोड़ तक का कॉर्पस, मोटा निवेश करेंगे तो मोटा मुनाफा भी मिलेगा

मुनाफा
बिजनेस डेस्क

नौकरी लगते ही निवेश के चक्कर में न पड़ें। कुछ साल तक खुद पर निवेश करें और अपनी प्रतिभा को और निखारें। स्टार्टअप्स के इस दौर में आपको अक्सर देखने को मिलता होगा कि लोगों को कोई समस्या दिखी और उन्होंने उसका समाधान निकालते हुए स्टार्टअप शुरू कर दिया। तो शुरू के कुछ साल पैसे किसी स्कीम में लगाने के बजाय, खुद पर लगाएं और अपनी वैल्यू बढ़ाएं। इसके बाद आपके पास निवेश करने के लिए अधिक पैसे होंगे और आप अच्छा रिटर्न प्राप्त कर पाएंगे। लेकिन यह मानसिकता उन लोगों के लिए है जो ज्यादा अमाउंट निवेश करना चाहते हैं। हालांकि आपने अक्सर लोगों को यह कहते सुना होगा कि जितनी जल्दी निवेश शुरू करोगे, उतना ही ज्यादा रिटर्न मिलेगा। जब 22-23 साल की उम्र में किसी की नौकरी लगती है, तो उसे सबसे पहले यही सलाह दी जाती है कि तुरंत निवेश शुरू कर दो, भले ही वह छोटा सा क्यों ना हो। ये बात बिल्कुल सही है कि जितनी जल्दी निवेश शुरू करेंगे, कंपाउंडिंग की वजह से आपको उतना ही ज्यादा रिटर्न मिलेगा, लेकिन यह सिर्फ उन लोगों के लिए अच्छा है, जो बड़ा अमाउंट निवेश कर पा रहे हैं। मामूली निवेश करने वाले लोग अगर ये सोचेंगे, तो तगड़ा रिटर्न नहीं कमा पाएंगे।

इसे ऐसे समझें

मान लीजिए कि 22-23 साल की उम्र में करीब 25 हजार रुपये की सैलरी वाली आपकी नौकरी लग जाती है। अब इसमें से अगर आप हर महीने कम से कम 10-15 हजार रुपये निवेश कर पाएं, तब तो आपको कंपाउंडिंग का फायदा समझ आएगा, वरना आपका निवेश करना आपको फायदा नहीं देगा। दिल्ली-एनसीआर जैसे शहरों में 20-25 हजार रुपये तक को एक आदमी का घर का किराया, खाना-पीना, ऑफिस आना जाना और कपड़े आदि में ही खर्च हो जाता है। यानी इतनी कम सैलरी से अगर आप बचा भी सके तो मुश्किल से 1-2 हजार रुपये ही हर महीने निवेश कर पाएंगे। वहीं अगर अपने खर्चों को बहुत ज्यादा कम भी कर दिया तो भी 5 हजार रुपये से ज्यादा बचा पाना काफी मुश्किल है।

पांच साल में रिटर्न

अगर आप हर महीने 5 हजार रुपये निवेश करते हैं और साल दर साल उसे 10 फीसदी की दर से बढ़ाते हैं तो 5 साल में आप 4,67,755 रुपये का कॉर्पस बना लेंगे।

ऐसे करें तुलना

अगर आप करियर शुरू होने के बाद से ही 5 हजार रुपये हर महीने निवेश करते जाते और हर साल उसे 10 फीसदी बढ़ाते जाते तो आपके पास 10 साल में करीब 15 लाख रुपये का कॉर्पस जमा हो रहा था। बशर्ते आपको हर साल 10 फीसदी का औसतन रिटर्न मिलता। वहीं दूसरी ओर, अगर आप 5 साल खुद पर निवेश कर के अपनी सैलरी 4 गुना कर के निवेश शुरू करते हैं तो महज 5 साल में ही अपने कॉर्पस को 1.5 करोड़ रुपये तक का बना सकते हैं, यानी 10 गुना ज्यादा। तो करियर के शुरुआती दौर में भविष्य के लिए निवेश ना करें, अपने ऊपर निवेश करें, ताकि खुद के भविष्य को बेहतर बना सकें।

इसमें आपका कुल निवेश होगा 3,66,306 और उस पर आपको 1,01,449 का ब्याज मिलेगा। यह भी तब होगा तब आपको 10 फीसदी की दर से रिटर्न मिलेगा, जबकि तमाम बैंकों में एफडजी रेट 7-8 फीसदी से अधिक नहीं हैं। अगर आप इसी दर से 10 सालों तक निवेश करते हैं तो आपके पास 15,22,926 का कॉर्पस जमा हो जाएगा।

शुरूआत में यह करें

करियर के शुरुआती 5 सालों में आपको पैसे निवेश करने के बजाय उन्हें खुद पर इन्वेस्ट करना चाहिए। जो पैसे बचाकर आप निवेश करने की सोच रहे थे, उन पैसों को बचाकर कोई नई स्किल सीखें। इस बात की हर संभव कोशिश करें कि कैसे आप अपनी सैलरी को 4-5 गुना या उससे भी ज्यादा कर सकते हैं। आपको सिर्फ नई स्किल सीखने पर ही फोकस नहीं करना चाहिए, बल्कि घूमने-फिरने पर भी पैसे खर्च करने चाहिए। स्टार्टअप्स के इस दौर में आपको अक्सर देखने को मिलता होगा कि लोगों को कोई समस्या दिखी और उन्होंने उसका समाधान निकालते हुए स्टार्टअप शुरू कर दिया। तो शुरू के कुछ साल पैसे किसी स्कीम में लगाने के बजाय, खुद पर लगाएं और अपनी वैल्यू बढ़ाएं।

जमा हो जाएंगे 1.5 करोड़ रुपये

मान लीजिए कि आप 5 सालों तक अपने निवेश किए जाने वाले पैसों से कुछ स्किल सीखते हैं और उसके दम पर अपनी सैलरी 3-4 गुना तक बढ़ाने में कामयाब हो जाते हैं, जो बड़ी बात नहीं है। ऐसे में पहले आपकी जो सैलरी 25 हजार रुपये थी, अब वह 4 गुना तक बढ़कर 1 लाख रुपये हो सकती है। अब अगर 5 साल बाद आपके खर्चे 20 हजार रुपये महीने से बढ़कर 50 हजार रुपये महीना भी हो जाते हैं, तो भी आपके पास करीब 50 हजार रुपये बचेंगे। इस तरह अगर आप अगले 5 साल 50 हजार रुपये हर महीने 10 फीसदी बढ़ाते हुए निवेश करते हैं तो आपके पास करीब 1.52 करोड़ रुपये तक जमा हो सकते हैं।

होम ट्यूटर बनकर कमा सकते हैं हर महीने हजारों रुपये

आईडिया: शिक्षा पर अच्छी कमांड होनी चाहिए

- यह इनकम बढ़ाने का सबसे आसान तरीका
- आजकल बच्चों में ट्यूशन का बड़ा क्रेज
- इसके लिए किसी बड़े निवेश की जरूरत नहीं

जानकारी
बिजनेस डेस्क

यदि आप पढ़े लिखे हैं और बेरोजगार हैं तो आप होम ट्यूटर बनकर अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं। आप इस बिजनस के माध्यम से हर माह अच्छे खासे रुपये कमा सकते हैं। यदि आप खुद का बिजनस शुरू करना चाहते हैं तो होम ट्यूटर बनना आपके लिए बेहतरीन बिजनेस आईडिया हो सकता है। यह एक ऐसा कारोबार है, जिसमें कोई बड़ा निवेश करने की भी जरूरत नहीं होती। इसे आप गांव, कस्बे या शहर कहीं भी कर सकते हैं। हालांकि आपकी शिक्षा पर अच्छी कमांड होनी चाहिए। आप किसी भी शहर में हिंदी, अंग्रेजी, साइंस, मैथ, केमेस्टट्री और फिजिक्स जैसे सबजेक्ट पढ़ाकर आसानी से अपनी इनकम बढ़ा सकते हैं। इसके अलाव छोटे बच्चों को भी ट्यूशन दे सकते हैं। आजकल बच्चों में ट्यूशन का बड़ा क्रेज देखने को मिल रहा है। ऐसे आप होम ट्यूटर बनकर अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं।

क्या है होम ट्यूटर

होम ट्यूटर एक ऐसा बिजनस है जो अपने घर से शुरू किया जा सकता है। यही नहीं यदि आपके पास किसी मोहल्ला या शहर में जगह है तो आप अपने खुद का इंस्टिट्यूट खोल सकते हैं। होम ट्यूटर बिजनस के माध्यम से आप छोटे बच्चों से लेकर बड़े बच्चों तक की ट्यूशन क्लास शुरू कर सकते हैं, जिसमें आप कक्षा हिंदी, अंग्रेजी और गणित के साथ विज्ञान के बच्चों को अपने घर से पढ़ाना शुरू कर सकते हैं। यही नहीं आपको मालूम ही है कि आजकल टेक्नोलॉजी का जमाना है। आप अपने घर से ऑनलाइन होम ट्यूटर के माध्यम से भी बच्चों को पढ़ा सकते हैं। यदि आप किसी एक विषय में दक्ष हैं तो आप एक विषय के जरिए भी होम ट्यूटर बिजनस को शुरू कर सकते हैं।

पहले जानें जरूरी जानकारी

होम ट्यूशन शुरू करने से पहले आपको इस बिजनस की योजना को तैयार करना होगा। क्योंकि कोई भी बिजनस हो बिना योजना के शुरू नहीं किया जा सकता। उसके बाद बच्चों को और उनके पेरेंट्स को होम ट्यूशन के बारे में जानकारी देने के लिए आपको अपने मोहल्ले और शहर में प्रचार प्रसार करना होगा, ताकि बच्चे आपसे ज्यादा से ज्यादा जुड़ सकें। होम ट्यूशन में अधिक से अधिक बच्चों को जोड़ने के लिए आप ऑनलाइन सोशल मीडिया इंस्टाग्राम, फेसबुक और व्हाट्सएप का तरीका अपना सकते हैं। यही नहीं आप अपने मोहल्ले में बच्चों को आकर्षित करने के लिए पेम्पलेट का भी प्रयोग कर सकते हैं।

शुरू में बच्चों को छूट दें

इस बिजनस को शुरू करने से पहले बच्चों को फीस में छूट देनी होगी, ताकि बच्चे आपसे ज्यादा से ज्यादा जुड़ सकें। इसके अलावा, यदि आप अपने दक्ष विषय के अलावा दूसरे विषयों की भी होम ट्यूशन को शुरू करना चाहते हैं, तो आपके पास उन विषयों में दक्ष टीचर भी होने आवश्यक है।

कितनी हो सकती है कमाई

होम ट्यूशन के जरिए आप हर माह हजारों रुपये तक की कमाई कर सकते हैं। इसके अलावा यदि आपके पास जितने ज्यादा बच्चे होंगे उतनी कमाई आपकी ढुगनी होगी। एक उदाहरण के तौर पर समझे तो आप एक बच्चे से हजार रुपये हर महीने के लेते हैं और आपके पास 50 बच्चे भी हैं तो इस अनुसार आप हर माह 50,000 रुपये तक कमा सकते हैं।

पहले जानें जरूरी जानकारी

होम ट्यूशन के फायदे

एक ही छात्र पर होता ध्यान : अभिभावकों द्वारा होम ट्यूशन लगाने का एक सबसे बड़ा कारण यह है कि स्कूलों में एक क्लास में कई छात्र होते हैं और शिक्षक प्रत्येक छात्र पर पूरा ध्यान नहीं दे पाते। होम ट्यूशन में एक शिक्षक का ध्यान एक छात्र पर रहता है और वो अपना पूरा ध्यान केंद्रित करके एक छात्र को अच्छी तरह सब समझा पाते हैं।

अच्छे शिक्षक मिलते हैं : होम ट्यूशन में आप अपने अनुसार अनुभवी शिक्षकों से अपने बच्चों को पढ़ा सकते हैं। कई स्कूलों में अनुभवी शिक्षक नहीं होते हैं। वहीं होम ट्यूशन देने वाले शिक्षकों को कई सालों का अनुभव होता है। आप अपनी क्षमता के अनुसार होम ट्यूशन लगा सकते हैं। आप अच्छे से अच्छे शिक्षक को घर पर अपने बच्चे को पढ़ाने के लिए बुला सकते हैं।

अधिक सीखने को मिलता है : होम ट्यूशन में छात्र अपनी क्षमता अनुसार अधिक भी सीख सकते हैं। स्कूलों में सभी बच्चों के अनुसार पढ़ाया जाता है। वहीं अगर आपका बच्चा अधिक सीखने की क्षमता रखता है तो अपने अनुसार पढ़कर सिलेबस को जल्दी खत्म करा सकता है।

छात्रों को मिलता है अच्छा माहौल : होम ट्यूशन से छात्रों को पढ़ने का अच्छा माहौल मिलता है। वे अपने अनुसार पढ़ाई कर सकते हैं। स्कूलों में क्लास में अधिक छात्रों के होने के कारण छात्र खुलकर शिक्षकों से सवाल नहीं पूछे पाते हैं। वहीं होम ट्यूशन में छात्र अपनी सुविधा के अनुसार शिक्षकों से आराम से सावल भी कर पाते हैं और अपने डाउट्स भी क्लीयर कर पाते हैं।

खबर संक्षेप

बिजनेस ग्रोथ सिम्पोजियम का आयोजन आज

हिसार। हिसार के उद्यमी वर्ग के लिए एक विशेष अवसर के रूप में, ग्रेटर हिसार चेम्बर ऑफ कॉमर्स 'बिजनेस ग्रोथ सिम्पोजियम' का आयोजन करेगा। यह सिम्पोजियम विशेष रूप से उद्योग जगत के विकास और विभिन्न योजनाओं पर चर्चा करने के लिए आयोजित किया गया है। इस संगोष्ठी का मुख्य आकर्षण जिंदल स्टेनलेस लिमिटेड के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और इकाई प्रमुख वीके बिंदलिश द्वारा दिया जाने वाला मुख्य भाषण होगा।

महंत मोहन दास आज हिसार में

हिसार। सेक्टर 16-17 स्थित श्री श्याम मंदिर का स्थापना दिवस 12 मई को मंदिर प्रांगण मे बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा। खाटूधाम में श्री श्याम प्रभु के मुख्य सेवक श्री मोहन दास जी विशेष रूप से इस समारोह मे शामिल होने के लिए हिसार पहुंचेंगे। मंदिर कमेटी सदस्य त्रिलोक बंसल ने बताया कि इस अवसर पर मंदिर परिसर को थाइलेंड , बैंकॉक, बेंगलुरु, कोलकाता, पुणे, दिल्ली से आए फूलों से भव्य रूप से सजाया जा रहा है।

विवाहिता के साथ दहेज के लिए मारपीट, केस

नारनौंद। गांव लोहारी राघो में एक विवाहिता के साथ दहेज के लिए मारपीट करने व घर से निकालने की कोशिश सहित विभिन्न धाराओं के तहत महिला पुलिस थाने में मामला दर्ज किया गया है। पुलिस को दी शिकायत में विवाहिता किरण ने बताया कि उसकी शादी करीब डेढ़ साल पहले लोहारी राघो निवासी कृष्ण कंबोज के साथ हुई थी। आरोप है कि शादी के कुछ समय के बाद ही उसके ससुराल वाले दहेज लाने की मांग को लेकर मारपीट कर रहे हैं।

अंजनी खरियावाला नेपाल में सम्मानित

हिसार। अग्रसेन भवन ट्रस्ट के प्रधान अंजनी कुमार खारियावाला को धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में विशेष योगदान देने के लिए नेपाल में सम्मानित किया गया है। अंजनी कुमार खारिया वाला अपने साथियों के साथ नेपाल भ्रमण पर गए हुए हैं। काठमांडू के अग्रवाल सेवा केंद्र द्वारा वहां के लक्ष्मी नारायण मंदिर पहुंचने पर समाजसेवी अंजनी कुमार खारियावाला को सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया।

एशियन मुक्केबाजी में दिखाया दमखम

पदक विजेता महिला मुक्केबाजों का अकादमी में किया स्वागत

एशियन मुक्केबाजी प्रतियोगिता में बीबीसी की महिला मुक्केबाजों ने जीते एक स्वर्ण सहित 4 पदक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। 11 बीडब्ल्यूएन:19 : पदक विजेता को सम्मानित करते हुए। *फोटो : हरिभूमि*

एक समय था, जब बेटियों को घर की चारदीवारी में ही रखा जाता था तथा बेटियों का किसी खेल या अन्य गतिविधियों में भाग लेना अपमान समझा जाता था, लेकिन आज देश की बेटियों की उपलब्धियां ऐसी संकीर्ण विचारधारा के मुंह पर तमाचा मारने का काम कर रही है तथा विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही है।

इसी कड़ी में अब 27 अप्रैल से 8 मई तक कजाकिस्तान में आयोजित हुई एशियन मुक्केबाजी चैंपियनशिप की अंडर.22 आयु वर्ग की प्रतियोगिता में सैक्टर.13 स्थित भिवानी बॉक्सिंग क्लब की 4 महिला मुक्केबाजों ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन करते हुए एक स्वर्ण सहित 4 पदक हासिल किए है। पदक विजेता खिलाडिय़ों का शनिवार को अकादमी में पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया। इस बारे में जानकारी देते हुए भिवानी बॉक्सिंग अकादमी के अध्यक्ष कमल सिंह प्रधान ने कहा कि इस प्रतियोगिता में 52 किलोग्राम भार वर्ग में निशा गुलेरिया ने स्वर्णए 48 किलोग्राम में सोनिका उर्फ गुड्डी ने रजतए 50 किलोग्राम में तमनना बेनिवाल ने रजत व 66 किलोग्राम भार वर्ग में प्रार्थवी ग्रेवाल ने कांस्य पदक हासिल किया है। उन्होंने कहा कि बीबीसी की सैंकड़ों महिला बॉक्सर राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक जीत चुकी है। यहीं नहीं ओलंपिक प्रतियोगिता में देश को मिलने वाला पहला पदक भी इसी अकादमी के खिलाड़ी ने हासिल किया था। कमल सिंह प्रधान ने कहा कि उन्हे अपने खिलाडिय़ों पर गर्व हैए जो कि अंतर्राष्ट्रीय पटल पर भिवानी व भिवानीवासियों को गौरवांवित कर रहे है। इस मौके पर बीबीसी के कोच द्रोणाचार्य अवॉर्डी जगदीश सिंह ने कहा कि मिनी क्यूबा भिवानी के हर खिलाड़ी की जीत अन्य खिलाडिय़ों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनती है तथा यही वजह है भिवानी के युवाओं में खेल के प्रति एक अलग ही जुनून व ज'बा देखने को मिलता। उन्होंने कहा यहां के खिलाड़ी विभिन्न प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का हुनर दिखाने से नहीं चूकते। जिसके चलते भिवानी को मिनी क्यूबा के नाम से भी जाना जाता है। इस मौके पर पदक विजेता खिलाडिय़ों ने अपनी जीत का श्रेय कोच द्रोणाचार्य अवॉर्डी जगदीश सिंह व अपने परिजनों को दिया। उन्होंने कहा कि कोच जगदीश सिंह बेहद अनुशासन प्रिय हैए जिनके द्वारा सिखाए गए अनुशासन एवं मेहनत के पाठ ने ही आज उन्हे इस मुकाम पर पहुंचाया है।

इस अवसर पर कर्नल मनोज कुमार, कोषाध्यक्ष चंपा देवी, एथलीट कोच जगदीश कुमार, कोच सतीश सांगवान, बंटी पंघाल, कुलदीप सिंह, मनोज कुमार, जयभगवान, सोमबीर शेषमा, साक्षी ढांडा, सोनिया चहल, शिवानी, रूचिका, मिशा, साक्षी ढांडा, कमल देवी, सहित अन्य खेल प्रेमी मौजूद रहे।

चरखी दादरी। ईंट भट्ठे पर जरुरतमंद परिवारों को कपड़े भेंट करते सामाजिक कार्यकर्ता संजय रामफल। फोटो : हरिभूमि

जरूरतमंद की मदद करना भगवान की सेवा के समान

■ खुशियां बांटने से बढ़ती हैं और दु:ख बांटने से घटता : रामफल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

जरूरतमंद इंसान को सेवा करने से आत्मा को संतुष्टि मिलती है तथा सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। दया एवं सहानुभूति ही मानवता है, जब किसी व्यक्ति को सख्त जरूरत होती है, तो जो उससे बेहतर उपलब्ध है, उसे जरूरतमंद व्यक्ति की हर संभव मदद करनी चाहिए। खुशियां बांटने से बढ़ती हैं और दुःख बांटने से घटता है, ये बात सामाजिक कार्यकर्ता संजय रामफल ने खुशियों की दीवार द्वारा जरूरतमंद लोगों को कपड़े वितरित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि हमारे यहां दान की परंपरा यानी देने का सुख प्राचीनकाल से चला आ रहा है। कहा जाता है कि घर की तिजोरी में बंद पड़ा धन अगर किसी की सेवा, सहायता, स्कूल व अस्पताल बनाने, भूखे को भोजन देने में खर्च कर दिया जाए तो उससे बढ़कर धन का बेहतर कोई इस्तेमाल नहीं हो सकता।

खुश रहने के लिए बांटें खुशियां

संजय ने कहा कि खुश रहने की अनिवार्य शर्त यह है कि आप खुशियां बांटें। जीवन के चौराहे पर खड़े होकर ये सोचने को विवश करता है कि सबके लिए जीने का क्या सुख है। मनुष्य के समाज के प्रति उसके कुछ कर्तव्य भी होते हैं। सबसे बड़ा कर्तव्य है एक-दूसरे के सुख-दुःख में शामिल होना और यथाशक्ति सहायता करना ही आत्मिक शांति व सही मायने में सुख हैं।

जुलूस निकालने से पहले लें अनुमति

■ शांतिपूर्ण और व्यवस्थित मतदान सुनिश्चित करने के लिए सभी आपसी तालमेल से करें सहयोग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भारत निर्वाचन आयोग ने लोकसभा आम चुनाव.2024 लड़ने वाले उम्मीदवारों व राजनीतिक दलों के लिए चुनाव के दौरान क्या करना है और क्या नहीं करना डूज एंड डोंट्स के दिशा निर्देश जारी किए हैं। इन दिशा.निर्देशों का चुनाव की प्रक्रिया पूरी होने तक उम्मीदवारों व राजनीतिक दलों को अनुपालना करनी अनिवार्य है। जिला निर्वाचन अधिकारी नरेश नरवाल ने बताया कि चुनाव आयोग द्वारा राजनीतिक दलों को क्या करना क्या नहीं की गाइडलाइन जारी की हैए उन्होंने बताया कि आयोग की गाइडलाइन के अनुसार सभी राजनीतिक दलों और चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों को सार्वजनिक स्थानों जैसे कि मैदान और हेलीपैड निष्पक्ष रूप से उपलब्ध होना चाहिए।

चुनाव के दौरान अन्य राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों की आलोचना केवल उनकी नीतियों कार्यक्रमों पिछले रिकॉर्ड और कार्यों तक ही सीमित रहनी चाहिए। इसके अलावा, शांतिपूर्ण और विवेकपूर्ण घरेलू जीवन के लिए प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार की पूरी तरह से रक्षा की जानी चाहिए। स्थानीय पुलिस अधिकारियों को पूरी तरह से सूचित किया जाना चाहिए और प्रस्तावित बैठक के समय व स्थान की आवश्यक अनुमति समय रहते सही तरीके से ली जानी चाहिए। नरवाल ने बताया कि प्रस्तावित बैठक के स्थान पर यदि कोई प्रतिबंधात्मक या निषेधात्मक आदेश लागू हैं तो उन आदेशों का सम्मान किया जाना चाहिए।

इसी प्रकार, प्रस्तावित बैठकों के लिए लाउडस्पीकर या ऐसी किसी अन्य सुविधा के उपयोग के लिए अनुमति प्राप्त की जानी चाहिए और बैठकों में गड़बड़ी या अव्यवस्था पैदा करने वाले व्यक्तियों से निपटने में पुलिस सहायता प्राप्त की जानी चाहिए। कि किसी भी जुलूस को शुरू करने और समाप्त करने के समय व स्थान तथा मार्ग को अग्रिम रूप से फाइनल किया जाना चाहिए और पुलिस अधिकारियों से पूर्व अनुमति प्राप्त करनी चाहिए। जुलूस का मार्ग यातायात को बाधित नहीं करना चाहिए। चुनाव लड़ने वाले सभी प्रत्याशी शांतिपूर्ण और व्यवस्थित मतदान सुनिश्चित करने के लिए चुनाव अधिकारियों का सहयोग करें।

जी लिट्रा वैली स्कूल में मातृदिवस मनाया

■ कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलन व मां शारदा की वंदना के साथ किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

जी लिट्रा वैली विद्यालय में मां के महत्व को दर्शाते हुए मातृदिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में डॉ. वंदना पुनिया, मंजू मितल, सुमन शर्मा, स्नेह लता, दिव्या गर्ग विशिष्ट रूप से उपस्थित रही। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलन व मां शारदा की वंदना के साथ किया गया।

कक्षा नर्सरी से बारहवीं तक के अनेक विद्यार्थियों की माताएं अपने बच्चों के साथ स्कूल में उपस्थित हुई। उपस्थित माताओं ने रैम्प वॉक, क्लैप फाइव, असैंबल ग्रुपए नृत्य व अनेक खेलों का आनंद लेते हुए कार्यक्रम में प्रतिभागिता की। सभी बच्चे व उनकी माताएं अति उत्साही व प्रसन्नचित दिखाई दी। प्राचार्या . सुमन यादव ने खेल प्रतियोगिताओं में विजयी माताओं को उपहार देकर सम्मानित किया। सभी अतिथियों को स्मृति चिंह व उपहार देकर उनका अभिनंदन किया। प्राचार्या ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि मां ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। मां शब्दों में बंया नहीं हो पाने वाला स्नेह,त्याग और ममत्व का प्रतीक रिश्ता है।

हर दिवस मां को समर्पित है किंतु मातृदिवस मनाकर हम अपनी मां के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते है, मां का हृदय प्रेम का सागर है,त्याग का महासागर है और ममत्व का ब्रहांड है। वह हमारे हर गम को दूर करने का सामर्थ्य रखती है। शैक्षणिक निर्देशिका दिव्या गर्ग, स्नेहलता मित्तल व प्राचार्या ने पूरे जी लिट्रा वैली परिवार की ओर से विद्यालय में पधारी सभी अतिथि स्वरूपा माताओं का धन्यवाद किया। प्रशासक एसके हलवासिया,ट्रस्टी अमन गर्ग ने सभी माताओं को मातृदिवस की बधाई दी।

इस मौके पर सभी स्टॉफ सदस्य, गैर शिक्षक वर्ग विद्यालय में मौजूद रहे। कार्यक्रम का संयोजन कल्पना चावला सदन के सभी सदस्यों की देखरेख में किया गया। अध्यापिका रविता, सौम्या, अध्यापक योगेश बरनेला, हर्ष तनेजा, चिराग, विवेक भारद्वाज, अनिल शर्मा आदि सभी का सहयोग व सम्पर्ण रहा।

भिवानी। आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षिका व अन्य। *फोटो : हरिभूमि*

एसएसडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल मनाया मातृ दिवस

भिवानी। सराय चौपटा स्थित एसएसडी सीनियर सैकेंडरी स्कूल में मातृ दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान विद्यार्थियों के अभिभावक भी विद्यालय में पहुंचे तथा अपने लाड़ले.लाड़लियों को आर्शीवाद दिया। मातृ दिवस के उपलक्ष्य में विद्यार्थियों को मां के नाम ग्रीटिंग कार्ड भी बनाए गए। मां के संघर्ष को दर्शाती कविता पाठ प्रतियोगिता में भी हिस्सा लिया। इस मौके पर स्कूल प्रबंधिका प्रतिभा सिंह ने कहा कि मां के त्याग और बलिदान के प्रति कृतज्ञ होने के लिए कोई खास दिन नहीं होता, लेकिन मातृ दिवस के रूप में मातृशक्ति के प्रति विशेष कृतज्ञता व्यक्त की जाती है और समाज तथा परिवार में उनकी भूमिका का सम्मान किया जाता है। उन्होंने कहा कि मातृ दिवस के दिन सभी बच्चे अपनी मां को स्पेशल फील कराने के लिए उपहार भेंट करते है। उन्होंने कहा कि बच्चों का जीवन बनाने में मां का बहुत बड़ा योगदान होता है।

आर्टिफिशल इंटेलिजेंस पर वर्कशॉप का आयोजन

■ आगामी समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की उपयोगिता बढ़ेगी : प्रोफेसर दीप्ति

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग द्वारा एप्लीकेशंस ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस रिसर्च विषय पर एक दिवसीय नेशनल वर्कशॉप का आयोजन किया। डीएसटी हरियाणा द्वारा नेशनल टेक्नोलॉजी दिवस के उपलक्ष्य में वर्कशाप के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाई गई। वर्कशॉप के समापन पर बतौर मुख्यतिथि विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर दीप्ति धर्माणी ने संबोधित करते हुए कहा कि आज साइंस एंड टेक्नोलॉजी का युग है। साइंस एंड टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में देश ने अभूतपूर्व तरक्की हासिल कर विश्व पटल पर अपना परचम लहराया है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की उपयोगिता और अधिक बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि वर्कशॉप के आयोजन से विद्यार्थियों और शोधार्थियों को लाभ मिलेगा।

भिवानी। सीबीएलयू में वर्कशॉप के दौरान वीसी प्रोफेसर दीप्ति धर्माणी को पौधा भेंट करते आयोजक। *फोटो : हरिभूमि*

कार्यक्रम में आईआईटी दिल्ली से डॉ. हसन, बेनेट यूनिवर्सिटी से डॉ. संजय कटारिया और पंजाब यूनिवर्सिटी से डॉ. नीरज सिंह वक्ता के रूप में पधारे। डॉ. नब्बी हसन ने रिसर्च आउट पुट बढ़ाने के लिए आर्टिफिशल इंटेलिजेंस की उपयोगी तकनीक के बारे में बताया। डॉ नीरज कुमार सिंह ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस किस तरह रिसर्च की शुरूआत से योजना, क्रियान्वयन एवं प्रकाशन तक प्रभावी तरीके से उपयोग हो सकता है पर प्रकाश डाला। डॉ संजय कटारिया ने रिसर्च में आचार नीति एवं साहित्य चोरी विषय को प्रभावी तरीके से समझाया। कुलसचिव डॉ ऋतु सिंह ने सभी अतिथियों एवं वर्कशॉप प्रतिभागियों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर फामेर्सी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर नितिन बंसल, डीन प्रोफेसर संजीव, डीन एकेडमिक प्रोफेसर डीके मदान, प्रोफेसर दीपक गुप्ता, प्रोफेसर सोनू मदान, डॉ आकाशदीप, डॉ. रीना, नीलम, डॉ. संजीव आदि मौजूद रहे।

कला प्रतियोगिता में अविका व प्रगति प्रथम

चरखी दादरी। डीआरके आदर्श विद्या मंदिर प्रांगण मे मातृ दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया। कक्षा नर्सरी से बारहवीं तक के छात्र-छात्राओं ने कला भाषण व कविताओं के माध्यम से मां की महिमा का वर्णन किया। कला प्रतियोगिता राकेश मुदगिल की देखरेख में हुई। निर्णायक मंडल की भूमिका विजय वर्मा व सीमा गोयल ने निभाई। पांचवी कक्षा की अविका व प्रगति को प्रथम, चेष्ठा को द्वितीय व हिमानी को तृतीय स्थान मिला। प्रतियोगिता में मयंक को चौथी कक्षा सांत्वना पुरस्कार से संतोष करना पड़ा। वहीं आर्यन, निहारिका मंयक, दीक्षा, हिमांशी आदि ने अपने भाषण व कविताओं के माध्यम से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्राचार्य अवनीन्द्र सती के कहा कि हर दिन मां का ही दिन होता है, दुनिया साथ दे या न दें, मां का साथ हमेशा ही रहता है। इस अवसर पर दादरी शिक्षण समिति की अध्यक्षा डॉ. विद्या गुप्ता, अनेक पदाधिकारी, शिक्षकवृंद उपस्थित रहे।

आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में बच्चों ने कविताओं से मां की महिमा बताई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

गांव मिलकपुर 2 के आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में मातृ दिवस को लेकर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के विद्यार्थियों ने अपनी उपस्थित दर्ज कराई। कार्यक्रम में सर्वप्रथम मां सरस्वती को नमन करते हुए बिरला स्कूल पिलानी से रिसोर्स पर्सन एवम मास्टर ट्रेनर ऑफ सीबीएसई राजन कुमार ने अध्यापकों से गुरु दक्षता के अंतर्गत, खेल कूद समायोजन, मूल्य आधारित शिक्षाए अनुभव अधिगम, एनईपी 2020, हैप्पी क्लासरूम, आर्ट इंटीग्रेशन, स्क्वाफ आदि विषयों पर चर्चा की तो वही सभी अध्यापकों व बच्चों को मातृ दिवस की बधाई दी। बच्चों ने इस अवसर पर माँ मेरी प्यारी माँ माँ तू कितनी अच्छी है आदि गीत व कविताएँ प्रस्तुत की जिसको सुन कर सभी श्रोतागण प्रफुल्लित हो उठे। इस अवसर पर पधारे स्कूल चेयरमैन आनंद यादव भट्ठे वाले ने कहा की मां भगवान का ही एक रूप होती है

ए हमें माँ मे भगवान को देखना चाहिए। सबसे पहली गुरु माँ ही होती है। हमें मां के बलिदान और त्याग को नहीं भूलना चाहिए। प्रिंसिपल नीतीश मिश्र ने बताया कि सर्वप्रथम ग्रीस देश में मातृ दिवस की शुरुआत हुई थी इसके बाद इसे हर जगह त्यौहार के रूप में मनाया जाने लगा। माँ के त्याग की गहराई को मापना संभव नहीं है हमें अपनी मां की कृतज्ञता को नहीं भूलना चाहिए। वाइस प्रिंसिपल गीता यादव ने अतिथि का स्वागत किया।

मां बच्चों की नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास की प्रथम गुरु

मां हमारे लिए सबसे बड़ा सुरक्षा कवच: वसुधा बहन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

मां हमारे लिए सुरक्षा कवच की तरह होती है, क्योंकि वो हमें सभी परेशानियों से बचाती है। मां ही बच्चों की नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास की प्रथम गुरु तथा घर परिवार की धूरी है, ये उद्गार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की कादमा शाखा में मातृ दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित /"स्वस्थ एवं सुखी परिवार में माताओं की भूमिका/" विषय पर क्षेत्रीय प्रभारी राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी वसुधा बहन ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि मां कभी अपनी परेशानियों का ध्यान नहीं देती और हर समय बस हमें ही सुनती है। उन्होंने कहा कि बच्चों को संस्कारवान बनाने और परिवार को स्वस्थ व सुखी बनाने में मां की बहुत बड़ी भूमिका होती है, क्योंकि समूचा परिवार उसके चारों तरफ घूमता है। बीके वसुधा ने कहा कि वर्तमान परिवेश में मां की भूमिका बहुत बड़ी है, क्योंकि मां, बेटी, बहू व सास आदि का पार्ट निभाती है, इसलिए स्वस्थ व सुखी परिवार तभी रह सकता है, जब एक मां मानवीय मूल्यों से संपन्न हो। उन्होंने कहा कि परिवार का नैतिक व चारित्रिक उत्थान में मां बहुत बड़ा रोल अदा कर सकती है और तभी हम एक सुखी परिवार की कल्पना कर सकते हैं। ब्रह्माकुमारीज जैसी संस्था का संचालन माताओं बहनों के हाथ में है, घर परिवार के साथ साथ समूचे समाज को आध्यात्मिक नैतिक चारित्रिक व मानवीय मूल्यों का विकास करना होगा।

चरखी दादरी। कार्यक्रम को संबोधित करती ब्रह्माकुमारी वसुधा बहन।

द्वेष व घृणा के कारण रिश्तो में आ रही गिरावट:

झोझूकलां सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी ज्योति बहन ने कहा कि आज ईर्ष्या, द्वेष व घृणा के कारण हमारे आपसी रिश्तो में गिरावट आ रही है, घर परिवार टूट रहे हैं। दु:ख,अशांति परेशानियां बढ़ रही है, जो चिंता का विषय है, जिसका मूल कारण हमारी आंतरिक शक्तियों की कमी है। अगर परिवार को स्वस्थ और सुखी बनाना चाहते हैं तुम महिलाओं का आर्थिक व सामाजिक सशक्तिकरण के साथ-साथ आध्यात्मिक सशक्तिकरण होना चाहिए।

खबर संक्षेप

मतदाता जागरूकता अभियान चलाया

भिवानी। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपयुक्त नरेश नरवाल के कुशल मार्गदर्शन में नेहरू युवा केंद्र के जिला युवा अधिकारी रोहित यादव व लेखा एवं कार्यक्रम सहायक जयशंकर के तत्वावधान में हेमंत सैनी कल्चर थिएटर एंड वेलफेयर सोसाइटी ने मतदान पर पेंटिंग के माध्यम से मतदान के बारे में जागरूक किया। जिला युवा अधिकारी ने बताया कि सबसे पहले मताधिकार चुनाव का महत्वपूर्ण हिस्सा है। मताधिकार का तात्पर्य चुनावों में वोट देने के अधिकार से है, किसे वोट देना चाहिए ये सवाल निश्चित रूप से महत्वपूर्ण मुद्दा है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक 18 वर्ष की आयु के युवा को मत का प्रयोग करना चाहिए और अच्छे उम्मीदवार का चयन कर मतदान करना चाहिए। जिला युवा अधिकारी ने कहा कि सभी युवा अपने अपने मत का प्रयोग करें और चुनावी महोत्सव में बढ़ चढ़कर भाग लें। सभी युवाओं ने शपथ ली कि लोकसभा चुनाव में अपने अधिकार का प्रयोग करेंगे।

मतदान के लिए स्वीप टीम ने किया जागरूक

चरखी दादरी। मतदान करने के लिए हम सभी को आगे आना होगा, तभी हम सही मायनों में लोकतंत्र को मजबूत करने में अपना पूरा सहयोग दे पाएंगे। हमें कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि हमारे एक व्यक्ति के वोट न देने से क्या होगा, संविधान की मजबूती के लिए प्रत्येक वोट की ताकत बहुत मायने रखती है, ये आहवान इन दिनों जिला उपायुक्त मंदीप कौर के दिशा निर्देशन में लोकसभा में अधिक से अधिक वोटिंग का आहवान करने वाली स्वीप टीम सदस्य मास्टर सुंदरपाल फौगाट, हरपाल आर्य व रविंद्र व अन्य सदस्यों ने लोगों से मिलकर मतदान को कही। इसी कड़ी में सभी गांव रामनगर व मकड़ाना पहुंचे व ग्रामीणों से मुलाकात कर अधिक से अधिक लोकसभा चुनाव में मतदान की अपील की। सुन्दरपाल फौगाट ने नागरिकों को समझाया कि वोट का अधिकार हमें संविधान ने दिया है, हमें इसका प्रयोग करना चाहिए।

दो दर्जन से अधिक गांवों में ट्रैक्टर मार्च निकाल जताया रोष

एमएसपी और अन्य मांगों को लेकर सड़कों पर उतरे किसान

यात्रा में ट्रैक्टरों पर किसान आंदोलन, महिला पहलवानों, आशा वर्कर्स, सरपंचों के साथ पुलिस की बर्बरता के फ्लैक्स लगे हुए थे

हरिभूमि न्यूज ⏭बाढ़ड़ा

किसानों ने एमएसपी सहित विभिन्न मांगों को लेकर बाढ़ड़ा विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न गांवों में शनिवार को ट्रैक्टर मार्च निकालकर सरकार के खिलाफ मोर्चा खोला। किसान नेता राजू मान की अगुवाई में किसान संगठनों व राष्ट्रीय ध्वज लगे ट्रैक्टर विभिन्न गांवों में पहुंचे, जहां ग्रामीणों ने यात्रा का स्वागत किया। बता दें कि बाढ़ड़ा क्षेत्र में आज किसानों ने भीषण गर्मी के बीच गांव लाड, भांडवा, खोरड़ा, काकड़ोली हुक्मी, काकड़ौली हट्टी, उमरवास, मांढी हरिया समेत दो दर्जन से अधिक गांवों में बड़ा ट्रैक्टर मार्च निकाल सियासी पारा बढ़ा दिया।

यात्रा में कई ट्रैक्टरों पर किसान आंदोलन, महिला पहलवानों, आशा वर्कर्स, सरपंचों के साथ पुलिस की बर्बरता के फ्लैक्स लगे हुए थे, जो आकर्षण का केंद्र रहे। ट्रैक्टर मार्च की अगुवाई किसान नेता राजू मान ने की।

इससे पहले बाढ़ड़ा के क्रांतिकारी चौक पर महाशय मंशाराम और राजा महताब सिंह की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण के बाद वयोवृद्ध किसान नेता रवींद्र सांगवान ने ट्रैक्टर मार्च को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

किसान आंदोलन में 750 से ज्यादा किसानों ने दी शहादत

किसान नेताओं ने कहा कि केंद्र व राज्य की हठधर्मी सरकार से बदला लेने का समय आ गया। किसान नेता रघुबीर श्योराण ने कहा कि किसान-मजदूरों का संघर्ष रंग लाएगा व सरकार की अब विदाई तय है। मान ने कहा कि एमएसपी की मुख्य मांग को लेकर चले तेरह माह के आंदोलन में 750 से ज्यादा किसानों ने अपनी शहादत दी, लेकिन केंद्र सरकार ने उनके लिए संवेदना तक नहीं जताई। आंदोलन रोकने को बॉर्डर पर लगाई कीलें व कंकरीट की दीवारों के साथ किसानों के बदन पर पड़ी एक एक लाठी का हिसाब लोस चुनाव में लिया जाएगा।

किसान भवन को लेकर दिए सुझाव

- किसानहित की सोच रखने वाले को वोट दें अन्नदाता : मलिक

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। संयुक्त किसान मोर्चा की बैठक के दौरान मौजूद संगठन पदाधिकारी।

संयुक्त किसान मोर्चा की बैठक शनिवार को कस्बा तोशाम स्थित ग्राम स्वराज किसान मोर्चा के कार्यालय में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता मोर्चा के युवा प्रदेश अध्यक्ष युद्धवीर मंगल सिंह खरेटा ने की। बैठक में गांव खावा में निमार्णाधीन शहीद किसान योद्धा मंगल सिंह खरेटा किसान भवन के निर्माण को लेकर सभी ने अपने विचार व्यक्त किए।

किसानों से आगामी लोकसभा चुनाव को देखते हुए अपने हित की सोच रखने वाली पार्टी के पक्ष में मतदान करने की अपील की। भारतीय किसान यूनियन (मांगेराम मलिक) से रणबीर मलिक व मोर्चा के तोशाम ब्लॉक प्रधान ईश्वर बागनवाला ने कहा कि मतदान वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से हम अपने लोकतंत्र को मजबूत व देश को तरक्की की राह पर अग्रसर कर सकते है, इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति को मतदान प्रक्रिया में भाग लेना चाहिए। उन्होंने किसानों से आह्वान कि वे सोच-समझकर तथा अपने विवेक का प्रयोग कर ऐसे उम्मीदवार के पक्ष में मतदान करें, जो किसानहित की सोच रखता है। उन्होंने कहा कि अब किसानों का समय आया है, ताकि वे योग्य, सक्षम एवं किसानहित की सोच रखने वाले उम्मीदवार के पक्ष में मतदान करें। इस मौके पर सत्यवान, टेकराम पहलवान, राजबीर मलिक, हवलदार दयानंद, साहिल श्योराण, राकेश पंघाल, बहादुर सिंह, चांदीराम पंघाल आदि मौजूद रहे।

2 हजार 521 मामलों का मौके पर किया निपटारा

- दादरी जिला न्यायिक परिसर में लोक अदालत का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

दादरी। लोक अदालत में सुनवाई करते।

हरियाणा राज्य विधिक सेवाएं प्राधिकरण के निर्देशानुसार दादरी जिला न्यायिक परिसर में शनिवार को लोक अदालत का आयोजन किया। लोक अदालत के दौरान अतिरिक्त जिला सत्र न्यायाधीश पुरुषोत्तम कुमार, मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी,रामावतार पारीक, न्यायिक दंडाधिकारी सुमित कालों तथा न्यायिक दंडाधिकारी लक्ष्य गर्ग ने मामलों की सुनवाई की। लोक अदालत में वाहन दुर्घटना अधिनियम, रिकवरी, फौजदारी, चेक बाउंस, वैवाहिक, बैंक रिकवरी व बिजली से संबंधित मामलों की भी सुनवाई की गई। लोक अदालत में सुनवाई के लिए तीन हजार एक सौ तीस मामले रखे गए, जिसमें से 2 हजार 521 मामलों का मौके पर निपटारा कर दिया गया तथा 6.38 लाख करोड़ रुपये की राशि अवार्ड के रूप में पास की।

फैक्ट्री में काम करने वाले युवक ने लगाया फांसी का फंदा

तोशाम। मध्यप्रदेश के सागर जिले के मनावनगौरी गांव के 24 वर्षीय युवक ने मानसिक परेशानी के चलते फांसी का फंदा लगाकर जीवन लीला समाप्त कर ली। पुलिस ने मृतक के साथ काम करने वाले युवक के बयान पर इत्तफाकिया कार्रवाई की है। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार तोशाम में एक फैक्ट्री में काम करने वाले 24 वर्षीय युवक ने मानसिक परेशानी के चलते फांसी लगा ली। साथी युवक ने इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंच शव को कब्जे में लिया। पुलिस ने मृतक के साथ काम करने वाले युवक के बयान पर इत्तफाकिया कार्रवाई की है।

जनता को मिली केवल परेशानियां: राव

- भिवानी-महेंद्रगढ़ कांग्रेस प्रत्याशी राव दान सिंह ने तोशाम हल्के में किया दौरा, भाजपा सरकार पर बोला हमला

हरिभूमि न्यूज ⏭महेंद्रगढ़

कांग्रेस युवाओं के भविष्य को लेकर गंभीर

जेजेपी पर आरोप लगाते हुए कहा कि आमतौर विधायकों को व्हीप जारी किया जाता है। सदन में हाजिर रहने के लिए इन्होंने विधायकों को सदन में हाजिर नहीं रहने को कहा यह इनकी मिलीभगत है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस युवाओं के भविष्य को लेकर गंभीर है। नौकरी की पक्की गारंटी देने के लिए प्रशिक्षुता अधिकार अधिनियम लाया जाएगा यह कानून 25 वर्ष से कम उम्र के प्रत्येक डिप्लोमा धारक या कॉलेज ग्रेजुएट को निजी या सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी में एक साल की ट्रेनिंग के लिए राईट-टू-ओपरेटिव एक्ट गारंटी देना है युवाओं को ट्रेनिंग में स्किल मिलेगा रोजगार क्षमता बढ़ेगा।

भाजपा सरकार में आम लोगों का जीना मुहाल हो गया है। प्रदेश में महंगाई और बेरोजगारी दिनों दिन बढ़ रही है। वहीं भाजपा सरकार अपने 10 साल के कार्यकाल को विकास बता रही है। जनता आगामी चुनाव वोट से माध्यम से भाजपा पर चोट करेगी। उक्त विचार भिवानी महेंद्रगढ़ कांग्रेस प्रत्याशी राव दान सिंह ने शनिवार को तोशाम विधानसभा क्षेत्र के गांव मालवास, मलवास कुहाड़, कुसुंभी, केहरपुर, टीटानी, हेतमपुरा, लेघा हेतवान, लेघा भानन, जीतनवास, शिमलीवास, मन्नारवास, धारवाण वास, देवराला, खपड़वास, इंढीवाली, लड़ियावाली, बिजलानावास, ढाब ढाणी, पोकरवास, लालावास, बावरवास, चंदावास, कैरु, ढागर में ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहीं। गांवों में पहुंचने पर राव दानसिंह का ग्रामीणों ने जोरदार स्वागत किया।

अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाया योजनाओं का लाभ : धर्मबीर

- भाजपा शासनकाल में पिछले 10 वषार्े के दौरान बदली देश की दिशा व दशा

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। जन सम्पर्क अभियान के तहत लोगों को संबोधित करते भाजपा प्रत्याशी धर्मबीर सिंह।

भिवानी-महेंद्रगढ़ लोकसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी चौ. धर्मबीर सिंह ने कहा कि भाजपा की सोच देश के प्रत्येक जन के हित को ध्यान में रखते हुए योजनाएं क्रियान्वित करना है। यही नहीं भाजपा द्वारा योजनाएं क्रियान्वित करके यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि उन योजनाओं का लाभ पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति तक मिले। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में में देश की दशा और दिशा पूर्ण रूप से बदली है। प्रधानमंत्री द्वारा लागू की योजनाओं के चलते एक तरफ जहां आमजन की स्थिति सुधरी है तो वही राष्ट्रहित के फैसलों के दम पर आज विश्व भर में भारत का नाम सम्मानपूर्वक लिया जाने लगा है। उन्होंने कहा कि जम्मू में जहां पहले सैनिकों पर पत्थर बरसाए जाते थे, वही अब सैनिकों पर फूल बरसते है तथा यह सब प्रधानमंत्री नीति की वजह से ही मुमकिन हो पाया है। भाजपा प्रत्याशी धर्मबीर सिंह अपने जनसंपर्क अभियान के दौरान कोंट रोड़, कीर्तिनगर, बैंक कॉलोनी, ढाणा रोड़, पीपली वाली जोहड़ी, जागृति कॉलोनी, कृष्णा कॉलोनी, सेक्टर.13ए विद्या नगर आदि क्षेत्रों में जनसभाओं को संबोधित कर रहे थे। वहीं धर्मबीर सिंह ने तोशाम हल्के के गांव ढाणी रिवासा जाटान, ढाणी रिवासा अहीर, धारण, रिवासा, निगाना कलां,निगाना खुर्द,दुल्हेड़ी, आमलपुर, संडवा, पटौदी, थिलौड़, बादलवाला, बिडौला, छपार रागडान, छपार जोगियान,गारनपुरा खुद, पिंजोखरा, खानक, किरावड़, ढाणी किरावड़, सांगवान, दांग कलां, दांग खुर्द, ढाणी बीरन,बीरण, बापोड़ा,खरकड़ी राजपुरा आदि गांवों का दौरा किया। कार्यक्रमों की अध्यक्षता भाजपा जिला अध्यक्ष मुकेश गौड ने की।

धर्मबीर सिंह की धर्मपत्नी मुन्नी देवी ने की मतदान की अपील

भाजपा प्रत्याशी चौ. धर्मबीर सिंह के पक्ष में मतदान की अपील के साथ चौ. धर्मबीर सिंह की धर्मपत्नी मुन्नी देवी ने शनिवार को काकड़ौली हुक्मी, लाडावास, द्वारका, डांडमा, सिरसली, कारी रूपादास, कारीमोद, क्रांतिकारी चौक पर महिलाओं को संबोधित किया। इस मौके पर मुन्नी देवी ने कहा कि भाजपा सरकार ने राजनीति के इतिहास में महिलाओं के हित में अभूतपूर्व कार्य किए है। जिसके चलते आज महिलाएं आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ी है।

सीएल स्कूल का निशांत एनडीए में पास

नारनौल। हाल ही में यूपीएससी की ओर से एनडीए का परिणाम घोषित किया गया। जिसमें सीएल पब्लिक स्कूल के होनहार छात्र निशांत पुत्र सतीश ने प्रथम प्रयास में ही एनडीए की परीक्षा उत्तीर्ण कर क्षेत्र व संस्था का नाम रोशन किया है। इस सफलता पर स्कूल में काफी उत्साह का माहौल है। छात्र की इस उपलब्धि पर संस्था के प्रबंधक निदेशक डा. अमित गुप्ता ने उनको बधाई देते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। स्कूल प्राचार्य रविंद्र सिंह व समस्त स्टॉफ ने भी बच्चे को बधाई दी।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8295157800, 8814999151, 9253681005

राष्ट्रीय लोक अदालत ने 13756 केस निपटाए

- इस वर्ष की दूसरी राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। राष्ट्रीय लोक अदालत के दौरान केसों की सुनाई करते हुए।

हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के आदेशानुसार एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के चेयरमैन व जिला एवं सत्र न्यायाधीश दीपक अग्रवाल के मार्गदर्शन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव एवं सीजेएम कपिल राठी ने बताया कि शनिवार को जिला मुख्यालय के अलावा तोशामए सिवानी व लोहारू न्यायिक परिसर में भी इस वर्ष की दूसरी राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। सीजेएम कम सचिव कपिल राठी ने सभी कोटार्े में आयोजित राष्ट्रीय लोक अदालत का अवलोकन किया। सीजेएम कपिल राठी ने बताया कि लोक अदालत वैकल्पिक विवाद समाधान की एक प्रणाली है जो भारत में बदलते समय के साथ एक प्रणाली के रूप में स्थापित हुई है। लोक अदालतें न केवल लंबित विवाद या पार्टियों के बीच उत्पन्न होने वाले विवादों को सुलझाती हैं, बल्कि यह सामाजिक सद्भाव को भी सुनिश्चित करती है क्योंकि विवाद करने वाले पक्ष अपने मामलों को अपनी पूर्ण संतुष्टि के साथ सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाते हैं।

19387 मामले रखे गए

मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी कपिल राठी ने कहा कि लोक अदालत में अपराधिक मोटर वाहन दुर्घटना, पारिवारिक मामले, चालान, बैंक ऋण, दीवानी मामले, चेक बाउंस, राजस्व आदि से संबंधित मामले रखे गए। उन्होंने बताया इस आयोजित राष्ट्रीय लोक अदालत में भिवानी की लोक अदालत में रखे गए कुल 19387 में से 13756 मामलों का निपटारा किया गया तथा 52216702 रुपये की कुल राशि का निपटान किया गया।

किरयाणा स्टोर में लगी आग, हजारों का नुकसान

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

बीती रात रोहतक गेट स्थित एक किरयाणा की दुकान में अज्ञात कारणों के चलते आग लग गई। आग से हजारों रुपये का सामान जलकर राख हो गया। बाद में पड़ौसियों ने इस बारे में अग्निशमन दस्ते को सूचना दी। सूचना के बाद दस्ता मौके पर पहुंचा और आग पर काबू पाया जा सका। जानकारी के अनुसार रात तीन बजे के आसपास रोहतक गेट स्थित एक किरयाना स्टोर में आग लग गई। दुकान के भीतर से आग की लपटें बाहर निकलती देख राहगीरों ने इस बारे में दुकान मालिक व पुलिस को सूचित किया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। साथ ही दमकल विभाग का दस्ता सूचना के बाद मौके पर पहुंचा।

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सैं.मी 10X 8 सैं.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

बायोमैट्रिक हाजिरी के खिलाफ और 26000 रुपये वेतन को लेकर जताया रोष

मिड डे मील कर्मियों ने प्रदर्शन कर निदेशक को भेजा ज्ञापन

- सरकार जल्द समाधान करें, अन्यथा चुनाव में भुगतने पड़ेंगे परिणाम : कामरेड

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

इन्होंने किया संबोधित

सीटू व यूनियन नेताओं ने कहा कि सरकार ने जल्द मांगों का समाधान नहीं किया तो इसका खामियाजा लोकसभा चुनाव में भुगतना पड़ेगा। मिड डे मील वर्कर्स जनविरोधी सरकार को सत्ता से उखाड़ फेकने का काम करेगी। प्रदर्शन को सीटू नेता राममेहर सिंह, कुलदीप सिंह, जनवादी महिला समिति नेता अनुराधा, चौकीदार नेता भगतसिंह, यूनियन नेत्री सुदेश रिवासा, संतोष, अनीता, बिमला, बीरमती, मुकेश आदि ने भी अपने विचार रखे।

मिड डे मील वर्कर्स यूनियन सम्बंधित सीटू के आह्वान पर शनिवार को भिवानी व सिवानी में बायोमैट्रिक हाजिरी के खिलाफ, 12 माह वेतन, 26000 रुपये वेतन की मांग को लेकर मिड डे मील कर्मियों ने जोरदार प्रदर्शन किया और विभाग के निदेशक को ज्ञापन भेजा। उन्होंने मांग की कि सरकार जल्द समाधान करें, अन्यथा चुनाव में परिणाम भुगतने को तैयार रहे। विरोध प्रदर्शन से पूर्व सभा को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि पांच लाख रुपये रिटार्यमेंट लाभ, रिटार्यमेंट की उम्र 65 करने, 2000 रुपये वर्दी भत्ता करने, पीएफ, ईएसआई लागू करने व पक्का कर्मचारी का दर्जा देने की मांग को लेकर जोरदार प्रदर्शन किया व जिला उपायुक्त के मार्फत निदेशक के नाम ज्ञापन भेजा। प्रदर्शन की अध्यक्षता सुदेश रिवासा ने की व संचालन संतोष दिनोद ने किया।

सीटू जिला सचिव कामरेड अनिल कुमार ने कहा कि भाजपा की केन्द्र व राज्य सरकार समाज के सबसे कमजोर हिस्से से आने वाली मिड डे मील कर्मियों का भारी शोषण कर रही हैं। कमरतोड मंहगाई के कारण मिड डे मील कर्मियों व आम जनता को परिवार चलाना मुश्किल हो गया हैं, ऐसे समय में मामूली वेतन वो भी 10 माह का ही वेतन मिड डे मील कर्मियों को दिया जाता हैं।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 12 मई 2024

मातृ दिवस विशेष

अपने बच्चे से मां का जुड़ाव अत्यंत गहन और निस्वार्थ होता है। उसके जीवन को गढ़ने में ही नहीं संवारने में भी मां की भूमिका बहुत उदात्त होती है। मां की पूरी दुनिया, उसके बच्चे में ही समायी होती है। सच, हर संतान के लिए उसके मां की ममता, उसके प्रेम को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है।

अद्वितीय-असीम मां की ममता

{ आवरण कथा / कुमार राधारमण }

यह अकाट्य सत्य है कि मां सबकी जगह ले सकती है, लेकिन मां की जगह कोई नहीं ले सकता। इसलिए हमारा प्रेम, प्रेमिका के प्रति सर्वाधिक और पत्नी के प्रति सर्वोत्तम भले ही हो, लेकिन सबसे दीर्घजीवी ममतामयी और स्नेहपूर्ण प्रेम माता के साथ ही हो सकता है। हम चाहे बूढ़े हो जाएं, लेकिन अगर मां जीवित हैं, तो हमको उनकी जरूरत हमेशा महसूस होती है। उनके सान्निध्य में, उनके स्नेहपूर्ण स्पर्श में अप्रतिम आनंद और संतुष्टि की प्राप्ति होती है।

स्त्री का उदात्त स्वरूप

ओशो कहते हैं, 'मां होना स्त्री की सहज गति है। कोई पुरुष इसलिए विवाह नहीं करता कि पिता बन जाए, लेकिन स्त्री अनिवार्यतः विवाह इसलिए करती है कि वह मां बन सके। इसलिए मैं अपनी संन्यासिनों को मां कहता हूं, क्योंकि वह उनकी पूर्णता का अंतिम शब्द है। स्त्री की खोज उस दिन पूरी होगी, जिस दिन सारा जगत उसे अपनी संतान की तरह मालूम पड़ने लगे, सारा अस्तित्व उसे अपने बच्चे जैसा दिखने लगे, उसमें सारे अस्तित्व के प्रति मातृत्व जग जाए।'

आसान नहीं मां की भूमिका

पिता एक सामाजिक आवश्यकता भर है, लेकिन यही बात माता के संबंध में नहीं कही जा सकती है। बच्चे के जन्म के साथ ही मां का जन्म भी होता है। लेकिन, संतान को जन्म देना या मां बनना भर मां हो जाना नहीं है। जन्म तो अन्य प्राणी भी देते हैं। मां बनना और मां होना अलग-अलग बातें हैं। मां होना जीवन के सबसे कठिन कार्य को स्वीकार करना है। मां की भूमिका निभाना आसान नहीं होता है।

मां का अर्थ-स्वार्थहीनता

दुनिया के लिए हम करोड़ों लोगों में एक व्यक्ति मात्र होंगे, लेकिन मां के लिए हम ही पूरी दुनिया हैं। मां होने का अर्थ है, प्रेम का शुद्धतम रूप होना। प्रेम मातृत्व के साथ ही जन्म लेता है और उसके विदा होते ही समाप्त हो जाता है। बिना शर्त प्रेम केवल मां दे सकती है। अगर इस दुनिया में कोई एक चीज निश्चित है, तो वह है मां का प्रेम। बच्चे के प्रति मां के प्रेम जैसा दुनिया में कुछ भी नहीं। मां का अर्थ ही है स्वार्थहीनता।

त्याग-सहनशीलता की मिसाल

मार्क ट्वेन कहते हैं, 'बच्चा मां को कितना ही तंग करे, मां उसका आनंद ही लेती है। जब संतान का जन्म होता है, मां की अनगिनत रातें जागते हुए बीतती हैं। फिर भी, उसके चेहरे पर कोई क्षोभ या क्रोध नहीं, प्रसन्नता और संतोष की लालिमा ही दिखती है।'

महान लेखक जार्ज इलियट ने मां के बारे में ठीक ही कहा था कि संतान के मुखमंडल की प्रसन्नता ही उसके जीने का आधार होती है। जब तक शिशु कुछ कहना नहीं सीख पाता, तब तक मां की आंखों से नींद गायब रहती है। उसकी बंद आंखें भी बच्चे के लिए चिंतामग्न रहती हैं। बकौल अब्बास ताबिश, *'एक मुद्दत से मिरी मां नहीं सोई 'ताबिश', मैंने इक बार कहा था मुझे डर लगता है।'* इस धैर्य, सहनशीलता और त्याग का कोई सानी नहीं है।

संतान की पहली रोल मॉडल

चाहे किसी स्त्री के व्यक्तिगत जीवन या करियर के सपने मुरझा गए हों, लेकिन एक मां के तौर पर वह अपने बच्चे के सपने और उसके जीवन को निरंतर संवारती चलती है। यही नहीं, घर-परिवार की एकजुटता का आधार मां ही तैयार करती है। ऐसे में हर इंसान के लिए उसकी मां से बड़ा कोई दूसरा रोल मॉडल नहीं हो सकता है। पूर्व अमेरिकी बास्केटबॉल खिलाड़ी लिसा लेस्ली ने कहा था, 'जब तक मैं समझती कि रोल मॉडल होना क्या होता है, उससे पहले ही मेरी मां मेरे लिए रोल मॉडल बन चुकी थीं।'

निभाती है सबसे मूल्यवान दायित्व

मां ही बच्चे को जीने की कला सिखाती है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन का प्रसिद्ध कथन है, 'आज मैं जो कुछ भी हूं, अपनी मां की ही बदौलत हूं।' एक नैतिक, करुणावान, सभ्य और जिम्मेदार मनुष्य तैयार करना इस दुनिया का सबसे बड़ा और मूल्यवान दायित्व है, जिसे मां पूरी शिद्दत से निभाती है। किसी भी इंसान में जो कुछ भी बन सकने की संभावना होती है, उसमें मां की अनन्य भूमिका होती है। खुद अनपढ़ हो, तो भी बच्चों को पढ़ाती है मां। यह भूमिका, साहस और सौंदर्य शब्दों से परे है। इसी अर्थ में बिल वाटरसन ने मातृत्व को आविष्कार की जननी माना है। भारत में महान सांस्कृतिक आंदोलन के प्रणेता श्रीराम शर्मा आचार्य कहते हैं, 'माता का अर्थ है निर्माण करने वाले गुणों का होना।'

हर संकट में देती है संबल

संकट की हर घड़ी में सबसे पहले मां की ही याद आती है, क्योंकि कठिन से कठिन समय में भी संतान के प्रति मां की सहानुभूति और हौसला छीजता नहीं। प्रसिद्ध यहूदी उक्ति है कि मां वह भी समझती है, जो बच्चा कह नहीं पाता। हर मुश्किल वक्त में, आप मांगें न मांगें, मां संबल देती ही है। इफ्तिखार आरिफ का मशहूर शेर है, *'दुआ को हाथ उठाते हुए लरजता हूं, कभी दुआ नहीं मांगी थी मां के होते हुए।'*

मां के प्रति हों कृतज्ञ

मां का प्रेम हमारे भीतर एक नई ऊर्जा उत्पन्न करता है। इस ऊर्जा में हमारे अंतरतम को आलोकित करने की शक्ति होती है। यह ऊर्जा किसी बंधन को नहीं मानती और न ही यह हमें बांधती है। यह ऊर्जा मुक्तिदायी है। लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज के अर्थप्रधान और भौतिक युग में हम मां की गरिमा का मूल्य भूलने लगे हैं। मां के प्रति कृतज्ञता का जो भाव होना चाहिए, प्रायः हम उसकी अनदेखी करते हैं। स्वयं के साथ ही देश और समाज के उत्थान के लिए मातृशक्ति का सम्मान, उनके प्रति कृतज्ञता का भाव परम आवश्यक है। *

ऐसे हुई मातृ दिवस की शुरुआत

दुनिया भर के 40 से अधिक देशों में मई के दूसरे रविवार को मातृदिवस मनाया जाता है। कई और देशों में यह मार्च या दूसरे महीनों में भी मनाया जाता है। लेकिन भारत, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और संयुक्त राज्य अमेरिका में यह मई के दूसरे संडे को ही मनाया जाता है। मदर्स-डे की इस वैश्विक महत्ता को देखते हुए जो शुरुआती अनुमान बनता है, उससे लगता है शायद महिलाओं को उनकी मातृत्व विशिष्टताओं के लिए यह पुरुषों द्वारा दिया गया सम्मान होगा, पर ऐसा नहीं है। यह महिलाओं द्वारा खुद अपने लिए बड़ी जिद और जुनून से अर्जित किया गया सम्मान है, इसके लिए दुनिया की कई महिला नेत्रियों को दशकों तक संघर्ष करना पड़ा था।

जूलिया वार्ड हावे

एना जार्विस

इसमें कोई दो राय नहीं है कि आज पूरी दुनिया में मातृ दिवस मांओं के सम्मान को समर्पित है। लेकिन इस दिन को सम्माननीय बनाने के लिए जूलिया वार्ड होवे और एना जार्विस जैसी अमेरिकी सामाजिक कार्यकर्ताओं और नारीवादी एक्टिविस्टों ने बहुत कुछ किया है। मदर्स-डे की शुरुआत का श्रेय वास्तव में जूलिया वार्ड होवे को ही जाता है, लेकिन आधुनिक स्वरूप के मदर्स-डे की संस्थापक ब्रिटिश सामाजिक कार्यकर्ता एना जार्विस मानी जाती हैं। सन 1870 में जूलिया वार्ड होवे ने महिलाओं से अपने मां के सम्मान में मदर्स-डे मनाए जाने का आह्वान किया था। अगर कहें कि दुनिया में सबसे पहली बार इस दिवस की कल्पना उन्होंने ही की थी, तो गलत नहीं होगा, क्योंकि इस नारीवादी लेखिका ने देखा था कि युद्ध की क्रूरता को सबसे अधिक मांओं को झेलना पड़ता है। इसलिए युद्ध रोकने के लिए जूलिया वार्ड ने दुनियाभर की मांओं के लिए एकजुट होकर आगे आने का आह्वान किया था और दो वर्षों के बाद 1872 में पहली बार उनके नेतृत्व में इकट्ठी हुई महिलाओं ने 'मदर्स पीस-डे' मनाया, जो कि वास्तव में आज के मदर्स-डे की बुनियाद था। अमेरिका के कई शहरों में यह मदर्स पीस-डे अगले 30 सालों तक मनाया जाता रहा। लेकिन आगे चलकर एना जार्विस ने इस मदर्स पीस-डे को सिर्फ मदर्स-डे में बदल दिया। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि इससे हर कोई अपनी मां से जुड़ रहा था और मांओं के प्रति सम्मान का यह आदर्श दिवस बन गया था।

-संध्या सिंह

म से मां, मदर, मम्मी...

बच्चे को जन्म देने वाली स्त्री को क्या कहते हैं? हिंदी में मां, संस्कृत में माता, अंग्रेजी में मदर, फारसी में मादर, फ्रेंच में मेर, स्पेनिश में मादरे, इतालवी में मम्मा, जर्मन में मत्तेर, चीनी में मकून, रूसी में ममा, बांग्ला में मा आदि। जिन भाषाओं में जननी के लिए सम्मानसूचक शब्द 'म' या 'एम' से आरंभ नहीं होता, उनमें भी अकसर यही वर्ण प्रधान होता है जैसे- तमिल और मलयालम में अम्मा और उर्दू में अम्मी। ऐसा क्यों है कि अधिकतर भाषाओं में मां के लिए बोले जाने वाले शब्द 'म' से शुरू होते हैं या उनमें 'म' पर बल दिया जाता है? यह सोचने की बात है। मां की गोद में रहते हुए जब मैंने बोलना सीखा था तो मेरे मुंह से पहला शब्द 'मम' निकला था, जो मां के लिए भी था और पानी के लिए भी। अरबी भाषा में पानी को 'मा' कहते हैं। तो मां वो शय है, जिससे ममत्व गंगा की तरह बहता है। शायर कृष्ण स्वरूप के शब्दों में, *'कांपते होंठों से अम्मा जो दुआ देती है/ मेरे अल्लाह तेरे होने का पता देती है।* मैंने मां दुर्गा के नौ अवतारों- मां शैलपुत्री, मां ब्रह्मचारिणी, मां चंद्रघंटा, मां कूष्मांडा, मां स्कंदमाता, मां कात्यायनी, मां कालरात्रि, मां महागौरी और मां सिद्धिदात्री को अपने अंदर आत्मसात करके दुष्प्रवृत्तियों का नाश किया। यह आदमी से इंसान बनने की प्रक्रिया मुकम्मल न हो पाती अगर मां सरस्वती से ज्ञान, मां लक्ष्मी से समृद्धि और मां पार्वती से शक्ति नहीं मिलती। बाइबिल का वचन कितना सत्य है कि मां के बिना जीवन होता ही नहीं है। मां तू आलौकिक है। तेरे स्मरण मात्र से रोम-रोम पुलकित हो उठता है, दिल में जज्बात की अनहद लहर खुद-ब-खुद उमड़ पड़ती है और दिलो-दिमाग यादों के गहरे समुद्र में डूब जाता है। मां तेरी ममता और तेरे आंचल की महिमा को मैं शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ हूं। मां तूने मेरे लिए क्या नहीं किया- नौ माह अपने पेट में रखा, प्रसव पीड़ा को बर्दाश्त किया, स्तनपान कराया, रात-रात भर मेरे लिए जागी, खुद गीले में रह कर मुझे सूखे में सुलाया, मीठी-मीठी मुझे लोरियां सुनाई, अंगुली पकड़ कर मुझे चलना सिखाया, मैं रूठा तो तूने मुझे मनाया, मैं रोया तो तूने मेरे आंसुओं को पोंछा। आज भी जब मैं अंधेरे में भटकता हूं तो मां मैं अपने हाथ पर तेरा हाथ महसूस करता हूं, मेरा हाथ पकड़ कर तू मुझे राह दिखाती है... यह मेरी अनुभूति है। मुझसे पहले भी शायरों, विद्वानों, साहित्यकारों, दार्शनिकों आदि ने मां के प्रति उत्पन्न होने वाली अनुभूतियों को कलमबंद करने की भरपूर कोशिश की है, लेकिन वो भी मेरी तरह मां की समग्र परिभाषा और उसकी अनंत महिमा को अल्फाज में कहां पिरो पाए हैं। शायद ईश्वर की तरह ही मां को परिभाषित न कर पाना ही मां की मूल पहचान है। ममत्व और वात्सल्य की दृष्टि से दुनिया की सभी मांएं एक जैसी होती हैं और यही कारण है कि संसार की अधिकतर भाषाओं में म से ही मां, मदर, मम्मी जैसे शब्द बने हैं।

-शाहिद ए. चौधरी

{ जज्बात / मुनव्वर राना }

मां की दुआ

छू नहीं सकती मौत भी आसानी से इसको
यह बच्चा अभी मां की दुआ ओढ़े हुए है

चलती फिरती हुई आंखों से अज्ञां देखी है
मैंने जन्नत तो नहीं देखी है मां देखी है

मैंने रोते हुए पोंछे थे किसी दिन आंसू
मुद्दतों मां ने नहीं धोया दुपट्टा अपना

लबों पे उसके कभी बददुआ नहीं होती
बस एक मां है जो मुझसे खफा नहीं होती

इस तरह मेरे गुनाहों को वो धो देती है
मां बहुत गुस्से में होती है तो रो देती है

मेरी ख्वाहिश है कि मैं फिर से फरिश्ता हो जाऊं
मां से इस तरह लिपट जाऊं कि बच्चा हो जाऊं

ये ऐसा कर्ज है जो मैं अदा कर ही नहीं सकता
मैं जब तक घर न लौटूं मेरी मां सजदे में रहती है

यूं तो अब उसको सुझाई नहीं देता लेकिन
मां अभी तक मेरे चेहरे को पढ़ा करती है

(साभार)

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

वाचिक आलोचना का परिदृश्य

बहुआयामी वरिष्ठ साहित्यकार उद्भ्रांत विगत कई दशकों से विभिन्न विधाओं में निरंतर सृजनशील हैं। हालांकि उनके विपुल रचना संसार पर आलोचनात्मक विमर्श, तुलनात्मक रूप से कम ही हुआ है। हाल में स्वयं उन्हीं के संपादन में प्रकाशित पुस्तक 'हिंदी की वाचिक परंपरा का समकालीन परिदृश्य' इस लिहाज से महत्वपूर्ण मानी जा सकती है कि इसमें उद्भ्रांत के बहुविध लेखन पर अनेक वरिष्ठ आलोचकों के वक्तव्यों को हू-ब-हू संकलित किया गया है। यहां नामवर सिंह, विश्वनाथ त्रिपाठी, अशोक बाजपेयी और नित्यानंद तिवारी से लेकर राजेंद्र यादव, पंकज बिष्ट, पंकज शर्मा और देवेंद्र चौबे तक वरिष्ठ और नई पीढ़ी के लेखकों-आलोचकों के बेबाक विचार मौजूद हैं। इस पुस्तक की खासियत यह भी है कि संपादक ने अपने बारे में की गई तल्ख टिप्पणियों को भी इसमें संकलित करने से गुरेज नहीं किया है। उद्भ्रांत के रचना संसार को समझने में यह किताब काफी मददगार साबित हो सकती है। *

पुस्तकः हिंदी की वाचिक परंपरा का समकालीन परिदृश्य (आलोचनात्मक वक्तव्य), **संपादकः** उद्भ्रांत, **मूल्यः** 499 रुपए, **प्रकाशकः** नमन प्रकाशन, नई दिल्ली

{ लघुकथाएं }

मां की ममता की गहराई कभी नहीं मापी जा सकती। मां के लिए उसकी संतान सबसे बड़ी नियामत है। उसके लिए वह अपना सब कुछ न्यौछावर कर सकती है। मां की ममता को उकेरती लघुकथाएं।

मां हो तो ऐसी!

मां बनने के लिए वर्षों से अनुराधा इंतजार कर रही थी। एक दिन डॉक्टरों ने बताया कि वह दुर्घटना के कारण अब जीवन भर मां नहीं बन सकेगी। अनुराधा ने किसी बच्चे को गोद लेने का निर्णय लिया। दो वर्ष बाद ही उसने एक तीन माह के बच्चे को गोद ले लिया।

बच्चा अनुराधा की गोद में आया तो वह खुशी से झूम उठी। मां बनकर उसे अद्भुत आनंद की अनुभूति हो रही थी। ऐसा लगा मानो सारे संसार की खुशियां उसकी झोली में आ गई हैं। पूरी गली में उसने मिठाई बंटवाई। अनुराधा ने बच्चे का नाम रखा आलोक। सबसे बोली, 'आज से सभी लोग मुझे आलोक की मां कहकर बुलाएंगे।' सभी ने मुस्कुराकर हामी में सिर हिला दिया। बच्चा एक साल का हुआ तो उसने जब पहली बार अनुराधा को 'मां' कहकर पुकारा, वह खुशी से उछल पड़ी। मां पुकारे जाने पर उसे लगा जैसे उसका जीवन सार्थक हो गया। कितने सालों से वह मां शब्द सुनने को तरस रही थी। अनुराधा ने इस खुशी में एक बार फिर अपनी गली में मिठाई बंटवाई। जिस दिन बच्चे का अन्नप्राशन हुआ, उसने फिर गली में सबको मिठाई खिलाई। इतना ही नहीं पहले दिन जब आलोक स्कूल गया, अनुराधा सबको मिठाई खिलाना नहीं भूली। यहां तक कि जब कॉलेज में भी आलोक ने दाखिला लिया तो अनुराधा ने फिर मिठाई बांटी। पढ़ाई पूरी करने के बाद जिस दिन आलोक ने पिता के पुश्तैनी कारोबार में हाथ बंटाना शुरू किया तो अनुराधा ने लड्डू बांटे। गली की कुछ महिलाओं ने तारीफ में कह दिया, 'अनुराधा, तुम बेटे के हर काम के शुभारंभ पर सबको मिठाई खिलाना नहीं भूलतीं। तुम तो बहुत अनोखी मां हो।' इस पर अनुराधा बनावटी गुस्सा दिखाते बोली, 'लगता है तुम औरतों को मेरी खुशी से जलन हो रही है।' अनुराधा का उत्तर सुनकर नाराज होने के बजाय सारी महिलाएं एक साथ हंसकर बोलीं, 'मां हो तो ऐसी...!'

इस पर मां अनुराधा का सिर गर्व से ऊंचा होना ही था।
इस पर अनुराधा को गौरान्वित महसूस होना ही था। *

-अशोक वाधवाणी

हैप्पी मदर्स-डे

वृद्धाश्रम में मां आज काफी खुश थी। खुशी इस बात की नहीं कि उसके बेटे ने नई साड़ी या टूटा हुआ चश्मा बनवा कर दिया था, बल्कि खुशी तो इस बात की थी कि महीनों बाद उसका इकलौता बेटा उससे मिलने आया था। पूरे बीस मिनट उसके पास बैठकर उसकी खैर-खैरियत पूछी। मोबाइल पर उसके साथ दर्जनों सेल्फी लीं। बेटे के जाने के बाद वह उसके आने की खुशी वृद्धाश्रम की अन्य औरतों के साथ साझा कर रही थी। किसी ने पूछा, 'काफी महीनों बाद आज तुम्हारा बेटा तुमसे मिलने आया था। क्या आज तुम्हारा या तुम्हारे बेटे का बर्थ-डे है?' 'अरे नहीं, आज वो क्या कहते हैं... हां... हैप्पी मदर्स-डे है न!' मां हंसते हुए बोली। कुछ देर बाद मां अपने बक्से से बेटे की तस्वीर निकाल कर निहार रही थी, दूसरी ओर बेटा मां के साथ खींची हुई तस्वीरें मोबाइल स्टेटस और फेसबुक पर लगा रहा था। *

-विनोद कुमार विक्की

मां भावनाओं का समंदर

यह है स्वर्ग

आज चार वर्षीया दीपिका के स्कूल में मदर्स-डे मनाया जा रहा था। दीपिका के माता-पिता को भी आमंत्रित किया गया था। अचानक वह खड़ी हुई और उसने टीचर से पूछा, 'मैडम स्वर्ग क्या होता है?' एक पल सोचकर टीचर ने दीपिका और उसकी मम्मी को स्टेज पर बुलाया। दीपिका को उसकी मम्मी की गोद में बैठाकर बोलीं, 'बेटा, मां की गोद स्वर्ग होती है, मां भगवान जो होती है।'

स्कूल का हॉल तालियों से गूंज उठा। लेकिन दीपिका के मम्मी-पापा एक-दूसरे को ताकते हुए गर्दन झुकाए बैठे थे। कार्यक्रम खत्म होते ही दीपिका के मम्मी-पापा वृद्धाश्रम गए। दोनों ने दीपिका की दादी से क्षमा मांगी और उन्हें घर ले आए। मां की गोद में सिर रखकर दीपिका के पापा बोले, 'आज मुझे स्वर्ग मिल गया।'

घर में खुशियां गुनगुनाने लगीं। *

-चंद्रप्रकाश डाले

मां बहुत अजीब है

उसे मां पर बहुत गुस्सा आता है। कभी-कभी नफरत सी होती है। जब देखो तब मां उसे डांटती-फटकारती रहती हैं, कभी एग्जाम में नंबर कम लाने पर, कभी अपना कमरा गंदा रखने पर, तो कभी-कभी प्लेट में खाना जूठा छोड़ने पर भी। और तो और, गीला तौलिया बिस्तर पर छोड़ने पर भी डांटने से नहीं चूकतीं। उसे लगता है कि वह मां को कभी खुश नहीं कर पाएगा।

'कितनी अच्छी होती है मां। अपने बच्चों के लिए कुछ भी कर गुजरने वाली।' इस तरह की बातें पढ़ने-सुनने और देखने के बाद उसे अपनी मां बहुत अजीब लगती है।

'मां मुझे बिल्कुल प्यार नहीं करती। कहीं मेरी मां नकली तो नहीं!' उसके दिमाग में यह विचार घर बनाता जा रहा था। वह हरदम गुस्साया-सा रहने लगा।

आज किसी बात पर वह पड़ोसी लड़के से उलझ गया। लड़का जरा ताकतवर था। लड़के ने उसे मारने के लिए अपना हाथ उठा दिया। डर के मारे उसने अपनी आंखें बंद कर लीं। अचानक मां वहां आ गई।

'अब तो दो चपत इनकी भी खानी पड़ेगी।' उसने मन ही मन अपनी नियति तय कर ली। लेकिन यह क्या? मां ने लड़के का हाथ उसके गाल तक पहुंचने से पहले ही रोक लिया, बोली, 'खबरदार जो मेरे बेटे को हाथ लगाया।'

मां ने पड़ोसी लड़के को चेताया और उसे हाथ पकड़ कर अपने साथ ले गई। रास्ते भर उस लड़के को कोसती जा रही थी सो अलग। 'मां सचमुच बहुत अजीब है।' वह सोचता जा रहा था। *

-आशा शर्मा

मैं अच्छी मां बनूंगी

छह महीने का होने को आया नन्हा मुकुल पर लोगों के व्यंग्यबाण स्नेहा आज भी सुन रही है।

'सरोगेसी से मां बनने वाले... क्या जानें मां की भावना?'

'सच है! जिसने जना ही नहीं, उसे क्या पता बच्चा होने का दर्द? ना कोई स्ट्रेच मार्क, ना कोई स्टिचेस... बस बच्चा गोद में आ गया।'

मेडिकल प्रॉब्लम की वजह से नेचुरली मां ना बन पाना स्नेहा के लिए यूं भी बड़ा दुःखपूर्ण था, ऊपर से ऐसे तानों ने उसके दिल को छलनी कर दिया।

'गिरीश क्या मैं अच्छी मां बनूंगी?' जब तक पति गिरीश कुछ बोलते, नन्हे मुकुल ने तोतली जुबान से 'म... म्मा' बोल दिया।

गिरीश ने स्नेहा का हाथ थामा और जवाब में बोला, 'अच्छी मां बनने के लिए सिर्फ मां की ममता जरूरी है स्नेहा! पूरी दुनिया को यह यशोदा मां ने समझाया है।'

खुशी के मारे उसने मुकुल के नन्हे पैरों पर अपनी अंगुलियों से दिल बनाया, वही गिरीश ने भी किया। तीन खूबसूरत दिल एक-दूसरे के लिए धड़क रहे थे। *

-अवंति श्रीवास्तव

मनमोहक-आकर्षक
पहाड़ों का कुदरती सौंदर्य

घूमने के लिए तो देश-दुनिया में बहुत कुछ है, लेकिन जिन्हें कुदरती नजारे लुभाते हैं, वे पहाड़ों और उसकी हरी-भरी वादियों में घूमना बहुत पसंद करते हैं। अपने देश के अलग-अलग स्थानों पर स्थित पहाड़ों की क्या विशेषताएं हैं, वे एक-दूसरे से कितने अलग हैं, इनका अनुभव लेखक बयां कर रहे हैं अपनी जुबानी।

नेचर ट्रैवलिंग / समीर चौधरी

हल्की-हल्की ठंडी हवा देवदार के पेड़ों में झंकार पैदा करते हुए बह रही थी। दूधिया झरना पत्थरों के बीच में से होता हुआ उतर रहा था। कहीं दूर बर्फीला तीतर अपने साथी को पुकार रहा था। पहाड़ी के ऊपर बने पुरातन मंदिर में सूरज की किरणें पड़ रही थीं, जो बर्फीली मोती जैसी चोटियों को भी चमका रही थीं। सब कुछ परियों के देश जैसा लग रहा था। मैं पहाड़ों की यात्रा पर था। यह पिछले जाड़ों की बात है।

पहाड़ों का अस्तित्व है जरूरी

पहाड़ आपको लुभाते हों या नहीं लेकिन यह सभी को पता होना चाहिए कि पहाड़ों में जीवन देने की कितनी क्षमता होती है। साथ ही पहाड़ों की शानदार जैव विविधता की महत्ता को समझकर उसके संरक्षण का हर संभव प्रयास करना चाहिए। हमें जो ताजा, पीने योग्य पानी मिलता है, उसका 60 से 80 प्रतिशत पहाड़ों से हासिल होता है। पहाड़ असंख्य जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों को अपनी गोद में आसरा देते हैं। पहाड़ संपूर्ण भूमंडल का 24 प्रतिशत हिस्सा कवर करते हैं और 13 प्रतिशत ग्लोबल जनसंख्या को शरण देते हैं। इन महत्ताओं को जानने के अलावा पहाड़ी सौंदर्य मुझे हमेशा आकृष्ट करता रहा है। पहाड़ खामोश प्रहरी हैं, जो अनेक तरह से हमारी रक्षा करते हैं। पहाड़ों की यात्रा करने का अर्थ है प्रकृति से ऐसे जुड़ना कि अपने ही मन की गहराइयों में उतरने का अवसर मिल जाए।

हर पहाड़ का अलग आकर्षण

मैंने भारत के लगभग सभी हिस्सों यानी उत्तरी और दक्षिणी इलाकों में स्थित पहाड़ों की यात्रा की है। हर पर्वत श्रृंखला का अपना एक अलग ही आकर्षण होता है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि पहाड़ों की ऊंचाई और भूखंड कैसा है, क्योंकि इन्हीं से वहां का क्लाइमेट, वेजिटेशन और लोगों की जीवनशैली तय होती है। पिछले साल नवंबर में जब मैं उत्तराखंड के पहाड़ों से रूबरू होने गया था तो मैंने विंटरलाइन की मंत्रमुग्ध करने वाली सुंदरता का आनंद लिया, जहां जाड़ों के महीनों में शाम के समय नारंगी-सुनहरा कृत्रिम क्षितिज बन जाता है। यह दुनिया में सिर्फ दो ही जगह दिखाई देता है- अपने देश के मसूरी में और स्विट्जरलैंड में। इसी तरह जब मैं इस साल जनवरी में हिमाचल प्रदेश में था, तो मैंने एल्पेन ग्लो इफेक्ट देखा, जब सूर्य की किरणों के बिखरने से बर्फ से ढंकी चोटियां जलती आग की तरह लाल हो जाती हैं। इन दोनों ही कंडीशंस को समझने के लिए वैज्ञानिक दृष्टि और सिद्धांत तो है ही, लेकिन मुझ जैसे आम घुमक्कड़ के लिए यह प्रकृति का चमत्कार है, शानदार जादू है, जिसे केवल पहाड़ों में ही देखा जा सकता है।

दिल को छू लेती है उनकी सुंदरता

अगर टिहरी में मुझे देवदार के पेड़ों की सोनी-सोनी गंध ने मंत्रमुग्ध किया तो नड्डी के घने जंगलों ने मुझे अचरज से भर दिया। दक्षिण भारत में पहाड़ आमतौर से चाय बागानों का घर होते हैं, जैसे कि ऊटी, कुनोर और मुन्नार में। लेकिन बीच-बीच में ऊंचे सिल्वर ओक और यूकेलिप्टस के पेड़ भी हैं, जिन्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे वह नीले आसमान से कुछ राज की बातें सरगोशियों में कर रहे हों।

पहाड़ी पर्यटन का अनोखा आनंद

पहाड़ों की यात्रा करते समय मुझे आमतौर से सीधे, सच्चे, धार्मिक और मिलनसार स्थानीय लोग मिलते हैं, जो पर्यटकों का खुले दिल, खुली बाहों और मुस्कान के साथ स्वागत करते हैं। वे अपनी प्राकृतिक धरोहर पर गर्व करते हैं और पर्यटकों को अपनी भूमि, अपने देवताओं, अपने पशुओं और पहाड़ों के साथ अपने गहरे रिश्तों की दिल को स्पर्श करने वाली कहानियां सुनाते हुए कभी थकते नहीं हैं। मैं अकसर अकेला ही यात्रा करता हूं, इसलिए मैंने स्थानीय लोगों के साथ सुनसान जंगलों, खामोश पहाड़ों में घंटों बिताए हैं, लेकिन कभी भी मैंने परेशानी या असुरक्षा का एहसास तक नहीं किया। *

हम ही पहुंचा रहे नुकसान

पहाड़ केवल शानदार नजारों और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स योग्य तस्वीरों के लिए नहीं होते हैं। पहाड़ों में जीवन जीना कठिन भी होता है। चलना और बुनियादी काम जैसे कुकिंग और खेती के लिए भी जबरदस्त शारीरिक श्रम और स्टैमिना की आवश्यकता होती है। उनका इकोसिस्टम बहुत नाजुक होता है, जिसे संभालने और संरक्षित करने की जरूरत होती है। पहाड़ों पर जब बारिश पड़ती है या बर्फ गिरती है तो एक जगह से दूसरी जगह जाना और चीजों की उपलब्धता चिंता का विषय बन जाते हैं। प्राकृतिक आपदाएं जैसे फ्लैश फ्लड्स, भू-स्खलन, हिम-स्खलन आदि जीवन को पूरी तरह से रोक देते हैं, जिससे सुरक्षा और जीविकोपार्जन के लिए संकट उत्पन्न हो जाते हैं। अकसर ये आपदाएं मानव-निर्मित भी होती हैं। गैर-जिम्मेदाराना पर्यटन, स्वार्थी कमर्शियल लक्ष्य, बिना सोचे-समझे पेड़ों को काटना, अनियोजित शहरीकरण आदि कारण हैं, जिनसे पहाड़ों और पहाड़ी जीवन को बहुत नुकसान पहुंच रहा है। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और कश्मीर जैसे हिमालय पहाड़ के राज्यों में हाल के वर्षों में जो प्राकृतिक आपदाएं देखने को मिली हैं, वे हमसे सख्ती से कह रही हैं कि प्रकृति में असंतुलन उत्पन्न मत करो वर्ना प्रकृति का गुस्सा बर्दाश्त नहीं कर पाओगे।

उपयोगी पेड़ / शिवचरण चौहान

कहते हैं, मई-जून में अमलतास के फूल जितना अधिक खिलते हैं, मानसून में उतनी ही अच्छी बरसात होती है। अमलतास का फूलना सदैव मंगलकारी माना गया है। इस वृक्ष के विभिन्न नाम, प्रकार और विशेषताओं के बारे में जानिए।

पीले फूलों वाला
अमलतास का वृक्ष

पीले सुंदर फूलों वाले वृक्ष अमलतास को देव वृक्ष भी कहा जाता है। संस्कृत के कवि कालिदास ने इसकी बहुत प्रशंसा की है और इसे स्वर्ण फूल वाला वृक्ष कहा है। सचमुच सुंदर पीले फूलों से शोभायमान अमलतास अपने अद्भुत सौंदर्य से सबका मन मोह लेता है। यह वृक्ष भारत और म्यांमार के जंगलों में खूब पाया जाता है। यह पेड़ ज्यादातर समूह में नहीं उगता, लेकिन उन जंगलों में यह समूहों में उगता है, जिन जंगलों में बंदरों की अधिकता होती है। जब बंदर इसकी फलियों को तोड़ते हैं तो इसके बीज बिखर जाते हैं। इस तरह इन्हें दूसरी जगह पर उगने और फैलने का अवसर मिल जाता है, यह इसलिए उपयोगी होता है, क्योंकि इसके बीज कठिनाई से उगते हैं। इसके ज्यादातर बीजों को कीड़े फलियों के अंदर ही खा जाते हैं।

पेड़ की विशेषताएं: छोटे पौधों की छाल हरी, धुएं के रंग जैसी और चिकनी होती है। जो पेड़ पर ही लगे रहने के कारण काली ओर खुरदरी होती चली जाती है। अमलतास के फूल गर्म मौसम में अप्रैल, मई, जून के महीने में खिलते हैं। इन फूलों से लदे पेड़ों की सुंदरता देखने लायक होती है। लंबे पतीले से डंठलों पर लटकने वाले पीले फूल और गोल कलियां कानों में लटकने वाले झुमकों के समान दिखाई देते हैं। इसके पत्ते आकार में बड़े और जुड़े हुए होते हैं। पत्ते तीन से आठ जोड़ों में उगते हैं।

अमलतास के फूलों की छटा और नए पत्तों के रंगों को देखते हुए इसके कई भेद किए गए हैं। इसकी फलियां प्रारंभ में हरी ओर कोमल होती हैं। यह फलियां केंद्र से दो फीट लंबी लटकती हैं। हर फली में पच्चीस से सौ तक भूरे रंग के चमकीले बीज अलग-अलग खानों में पड़े रहते हैं। फली के अंदर काला मीठा गूदा रहता है, जो इन बीजों के साथ लगा रहता है। इस काले से गूदे को अमलतास का गुड़ कहते हैं। बंदर, गीदड़ और भालू आदि कई प्राणी इस प्राकृतिक गुड़ को चाव से खाते हैं। खासकर इसकी फली के कारण यह पेड़ बंदरों को विशेष रूप से प्रिय है। यही कारण है कि इस अमलतास के पेड़ का एक नाम 'बंदर लाठी' भी है।

नाम हैं कई : अमलतास का पेड़ भारत में लगभग सभी प्रांतों में पाया जाता है। पहाड़ों में भी 2000 फीट की ऊंचाई तक यह पाया जाता है। हर प्रदेश में इसका नाम अलग-अलग है। हिंदी में इसे किराल, किलवली, सिनार, तेलुगु में रेला, संस्कृत में सुवर्णक, बंगाली में बंदर लाठी, सोनाली, मराठी में जंबा, बेहावा, गुजराती में गरमा डो और अंग्रेजी में इंडियन लैबनर्म कहते हैं। इसका वैज्ञानिक नाम कासिआ फीस्टुला है। अन्य भारतीय भाषाओं में इसके नाम किरमाल, गिरमाल आदि हैं। ये शब्द संस्कृत के कृतमाल शब्द से निकले हैं। माला के समान लटकते फूलों के कारण संस्कृत में इसे कृतमाल का नाम दिया गया है। मालवा क्षेत्र में इसे गिरमली नाम से जाना जाता है। डच भाषा में इसे गोल्डन शावर नाम दिया गया है। चिकित्सा ग्रंथों में इसे स्वर्णद्रुम, स्वर्णांश और स्वर्ण भूषण जैसे नाम दिए गए हैं। वाल्मीकि ऋषि ने इसे कांचन वृक्ष अर्थात सोने के पेड़ जैसा सुंदर नाम दिया है। फूलों के उल्लास भरे सौंदर्य के कारण इसे राजवृक्ष अर्थात वृक्षों का राजा नाम भी दिया गया है।

अमलतास के वंश का एक और पौधा : अमलतास के वंश का एक और पौधा पाया जाता है, जिसे सनाय, अंग्रेजी में इंडियन सेन्ना, संस्कृत में भूपक्ष कहते हैं। यह झाड़ी नुमा होता है। दक्षिण भारत, अरब और सोमालीलैंड में इसकी प्रजातियां पाई जाती हैं। अमलतास के पत्ते ग्रीष्म ऋतु में गिर जाते हैं और फिर नए पत्ते आते हैं। अप्रैल, मई और जून में अमलतास बागों में या शहरों और महानगरों में सड़क किनारे अपने पीले फूलों से छटा बिखेरता दिखाई देता है।

अमलतास के उपयोगी गुण : अमलतास में अनेक औषधीय गुण पाए जाते हैं। अमलतास का लंबा-सा फल बहुपयोगी होता है। फल का गूदा रेचक औषधि के रूप में उपयोग किया जाता है। अमलतास के पेड़ की छाल को सुमारी कहते हैं। इसमें टेनिन प्रचुर मात्रा में होता है। अमलतास की लकड़ी बहुत मजबूत होती है, जो मकान, पुल और खेती में उपयोगी अनेक प्रकार के औजार बनाने के काम आती है। *

आत्मचिंतन / राजयोगी बीके निकुंज जी

संपूर्ण विश्व है एक परिवार

आत्मवत सर्व भूतानि यः पश्यति सः पंडिताः इस पौराणिक सूत्र में मानव कल्याण की समग्र भावना सन्निहित है। यह सारा विश्व एक सूत्र में बंध सकता है, यदि हम सभी संसार को एक कुटुंब के रूप में देखें और प्रत्येक मनुष्य से वैसे ही प्रेम करें, जैसे हम अपने परिवार के सदस्यों से करते हैं।

सभी मनुष्यों में रक्त संबंध: प्राकृतिक रचना की दृष्टि से भी देखा जाए तो सभी मनुष्य एक ही परिवार के सदस्य हैं, क्योंकि परिवार उसे माना जाता है जहां रक्त का संबंध स्थापित हो सके और संसार के किसी भी कोने के मानव का रक्त, संसार के किसी भी दूसरे कोने के अन्य मानव को चढ़ाया जा सकता है। और जहां तक रक्त के ग्रुप की बात है वह तो पिता और पुत्र का भी अलग-अलग हो सकता है अन्यथा जाति, कुल आदि के आधार पर रक्त की भिन्नता नहीं है। हम जानते हैं, एक ही केंद्र या स्रोत से निकलने वाले जल की कालांतर में अनेक धाराएं बन जाती हैं। कुछ ऐसा ही इस विश्व परिवार के साथ भी हुआ है। बीज और तने की सही जानकारी न होने के कारण कालांतर में निकली शाखाएं अपने को ही मूल पेड़ मान बैठी हैं और इस प्रकार शाखाएं, उप-शाखाएं, टहनियां आपस में टकराने लगी हैं। अब, पेड़ तो जड़ होता है और उसका बीज बोल नहीं सकता, नहीं तो वो बताता कि कौन-सी शाखा पहले आई, कौन-सी बाद में अर्थात पेड़ के क्रमवार विकास की जानकारी वह देता। परंतु, सृष्टि रूपी वृक्ष का बीज परमात्मा तो चेतन है। जब वह देखता है कि वैश्विक भावना को भूलकर उसके बच्चे छोटे-छोटे समूहों में बंट गए हैं और एक-दूसरे से कट गए हैं, उनका प्रेम संकुचित और स्वार्थपरक हो गया है, तब ऐसे माहौल को मिटाने के लिए वह स्वयं इस सृष्टि पर अवतरित होकर हम मनुष्यों को विश्व-परिवार की भावना से, एक परिवार में जोड़ने का महान कार्य करते हैं।

हम ना भूलें विश्व परिवार की भावना: आज जबकि भ्रष्टाचार सहित अनेकानेक समस्याओं से देश और विश्व जूझ रहा है, सभी में यदि विश्व परिवार की यह उच्चतम श्रेष्ठ भावना घर कर जाए तो इन सभी समस्याओं को छूमंतर होने में देरी नही लगेगी। स्मरण रहे, मेरे-तेरे की क्षुद्र भावनाएं ही समस्याओं को जन्म देती हैं, आपस में दूरियां बढ़ाती हैं। इसीलिए आज आवश्यक है कि हम संपूर्ण विश्व को अपने परिवार का हिस्सा मानें। किसी के प्रति कोई दुर्भावना ना पालें। इस सोच से ही विश्व का कल्याण संभव है। *

फीलिंग्स

इन दिनों सोनी सब चैनल पर टेलिकास्ट हो रहे सीरियल 'वागले की दुनिया-नई पीढ़ी नए किस्से' की कहानी के केंद्र में परिवार है। अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस (15 मई) के अवसर पर परिवार के महत्व के बारे में **हरिभूमि** को बता रहे हैं, शो के कलाकार।

हमारा प्यारा सपोर्ट सिस्टम
हमारा परिवार

सीरियल 'वागले की दुनिया' के प्रमुख कलाकार

एक ही छत के नीचे रहने वाले परिवार की तीन पीढ़ियों की दैनिक चुनौतियों, खुशियों और आपसी बंधन की कहानी को 'वागले की दुनिया-नई पीढ़ी नए किस्से' सीरियल में दिखाया जा रहा है। परिवार की महत्ता के बारे में अपनी फीलिंग्स यहां शेयर कर रहे हैं शो के एक्टर्स।

सीरियल 'वागले की दुनिया' में श्रीनिवास वागले की भूमिका निभाने वाले **अंजन श्रीवास्तव** कहते हैं, 'हमारा शो फैमिली की इंपॉर्टेंस को ही बताता है। मेरा मानना है कि फैमिली भी देश की तरह होती है। हैप्पी फैमिली के लिए हमें सभी को साथ लेकर चलना चाहिए। संभव है, इसमें रुकावटें आएंगी, ऑब्जेक्शंस होंगे, लेकिन इस वजह से हम फैमिली से अलग नहीं हो सकते। अपनी बात करूं, तो 54 सालों के मेरे प्रोफेशनल करियर में मेरी फैमिली, खासतौर से मेरी वाइफ का बहुत बड़ा योगदान रहा है। मेरा मानना है कि किसी भी फील्ड में ग्रो करने के लिए फैमिली सपोर्ट का बहुत बड़ा रोल होता है।'

सीरियल में राधिका वागले की भूमिका निभा रहीं **भारती आचरेकर** फैमिली की महत्ता को स्वीकार करते हुए कहती हैं, 'फैमिली को मैं बहुत इंपॉर्टेंट मानती हूं। हालांकि मैंने बहुत साल अकेले गुजारे हैं। दरअसल, जब मैं 34 साल की थी तभी अपने पति को खो दिया। अब मैं और मेरा बेटा, यही मेरी फैमिली है। लेकिन मेरा मानना है कि फैमिली होना, उसका सपोर्ट होना बहुत जरूरी है। बेटे के अलावा मेरी चार बहनें हैं और हम सभी एक-दूसरे के बहुत क्लोज हैं। मेरी बहनें आस-पास ही रहती हैं, कभी भी जरूरत पड़ने पर वे भागकर आती हैं। इससे मेरे मन में यह बात जरूर रहती है कि मेरी फैमिली है और जरूरत के वक्त मेरे फैमिली मेंबर्स मेरे साथ खड़े होंगे। इससे मुझे बहुत ताकत मिलती है।'

शो में राजेश वागले की भूमिका निभाने वाले **सुमित राघवन** कहते हैं, 'चाहे आनंद के क्षणों को साझा करना हो या एक साथ चुनौतियों से गुजरना हो, परिजनों का एक नेटवर्क होना वास्तव में आशीर्वाद की तरह है। आज की दौड़ती-भागती दुनिया में, खासकर बड़े शहरों में लोग तेजी से अलग-थलग हो रहे हैं। ऐसे में परिवार की महत्ता और भी बढ़ जाती है। मेरा मानना है कि हमारे सीरियल 'वागले की दुनिया' ने दर्शकों पर सकारात्मक प्रभाव डाला है, इससे उन्हें संयुक्त परिवार की अवधारणा को अपनाने और अपने प्रियजनों के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए प्रेरणा मिली है।'

सीरियल में वंदना वागले की भूमिका निभाने वालीं **परिवा प्रणति** कहती हैं, 'वंदना वागले के रूप में मुझे ऐसे शो का हिस्सा बनने का सौभाग्य मिला है, जो पारिवारिक जीवन के सार को खूबसूरती से दर्शाता है। इस सीरियल में हम उन बंधनों का जश्न मनाते हैं, जो हमें एक-साथ बांधते हैं। हम तीन साल से अधिक समय से साथ में काम कर रहे हैं और ऑफ-स्क्रीन भी एक परिवार की तरह हो गए हैं। वास्तविक जीवन में भी अपने परिवार में प्रियजनों के साथ रहने से जो खुशी और संबल मिलता है, वो अमूल्य होता है। हमें हर हाल में परिवार के साथ जुड़े रहना चाहिए।'

सीरियल में सखी वागले की भूमिका निभाने वाली **चिन्मयी साल्वी** कहती हैं, 'अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस, पारिवारिक बंधनों की सुंदरता का जश्न मनाने का क्षण होता है। हमें अपने परिवार के साथ जो भी खूबसूरत पल बिताने का अवसर मिले, उसे गंवाना नहीं चाहिए। हमारा शो भी परिवारों के भीतर एकजुटता, सहानुभूति और समझ के महत्व को बताता है।' *

प्रस्तुति: हरिभूमि फीचर्स

बड़ा पर्दा
अशोक जोशी

हालांकि लगभग हर फिल्म में मां किसी न किसी रूप में दिखाई जाती है। लेकिन कुछ फिल्में ऐसी हैं, जो मातृ शक्ति को पर्दे पर शिद्दत के साथ पेश करती हैं। कुछ ऐसी फिल्में बनी हैं, जिन्होंने मां के कद को और ऊंचे स्थान पर प्रतिष्ठित किया है। ऐसी ही कुछ चर्चित फिल्मों पर एक नजर।

फिल्मों में खूब दिखे
मां की ममता के रंग

'मदर इंडिया' : नरगिस ने निभाई यादगार भूमिका

'दीवार' : ममतामयी-सख्त किरदार में निरूपा राय

'करन-अर्जुन' : राखी ने निभाई दमदार भूमिका

बात जब मां के चरित्र पर केंद्रित फिल्मों की आती है तो सबसे पहले 'मदर इंडिया' का नाम जेहन में आता है। 1957 में आई नरगिस, राजेंद्र कुमार और सुनील दत्त अभिनीत इस फिल्म को महबूब खान ने निर्देशित किया था। 'मदर इंडिया' देश की आजादी के बाद की कहानी है, जिसमें एक गरीबी से त्रस्त महिला राधा, पति की गैर-मौजूदगी में अपने बच्चों की परवरिश के लिए संघर्ष करती दिखती है। यह ऐसी मां है, जो न तो अपने चरित्र पर दाग लगने देती है बल्कि अपने गांव की एक बेटी को दाग लगने से बचाने के लिए अपने बेटे की जान लेने तक से नहीं हिचकती।

ममतामयी ही नहीं कठोर भी: 'मदर इंडिया' में चित्रित मां का चरित्र बाद में कई सफल फिल्मों का आधार बना। सलीम जावेद ने अपनी फिल्म 'दीवार' और 'त्रिशूल' में ऐसी ही मां को चित्रित किया, जिसे निरूपा राय और वहीदा रहमान ने सशक्त तरीके से पर्दे पर उतारा। संजय दत्त की फिल्म 'वास्तव' की मां रीमा लागू भी ऐसी ही ममतामयी लेकिन सख्त मां है, जो अपने अपराधी बेटे को अपराध के दलदल से निकालने के लिए पिस्तौल का सहारा लेती है। सुचित्रा सेन, अशोक कुमार और धर्मेंद्र अभिनीत 1966 की हिंदी फिल्म 'ममता' उस युवती की कहानी है, जो अपनी उस मां के तलाश में है, जिसने बेटी के बेहतर जीवन के लिए अपने सपनों और अभिलाषाओं का त्याग कर दिया था। फिल्म का निर्देशन असित सेन ने किया था।

मां से जुड़ाव को उकेरती फिल्में : यूं तो 'आराधना' को एक रोमांटिक फिल्म माना जाता है, लेकिन इस फिल्म का आधार एक ऐसी मां की कहानी है, जो अपने बेटे का जीवन संवारने के लिए जेल तक चली जाती है। उसे अंत तक पता नहीं लगने देती कि वह उसकी मां है। बलिदानी मां की इस भूमिका को शर्मिला टैगोर ने बड़ी खूबसूरती से निभाया था। सलमान खान और शाहरुख खान अभिनीत 'करण अर्जुन' मां-बेटों के बीच प्यार की बड़ी खूबसूरत कहानी है। संपत्ति की लालच में मार दिए गए अपने दोनों बेटों के फिर से लौटने के इंतजार में बैठी मां (राखी) को आखिरकार उसके बेटे वापस मिल जाते हैं। फिल्म में मां की ममता के विश्वास की दृढ़ता और उसकी वजह से असंभव को भी संभव बनने का संदेश दिया गया है। फिल्म को राकेश रोशन ने निर्देशित किया है। 'राम लखन' में भी राखी ने ऐसी ही मां की भूमिका निभाई थी।

अचला सचदेव

रीमा लागू

ललिता पंवार

दुर्गा खोटे

कुछ भी कर गुजरने को तैयार मां : 1988 में प्रदर्शित फिल्म 'जख्म' दंगों में जला दी गई एक मुस्लिम मां की कहानी है। पूरी फिल्म एक मुस्लिम मां के उस हिंदू बेटे के इर्द-गिर्द घूमती है, जो अपनी मां की आखिरी इच्छा पूरी करने के लिए मरने के बाद उसे सम्मान के साथ दफन करने का फैसला करता है। फिल्म की कहानी बताती है कि कैसे एक मां अपने बच्चे और अपने प्यार के लिए आदर्श बनने के लिए अपनी आस्था छोड़ देती है। महेश भट्ट द्वारा निर्देशित यह फिल्म उनके खुद के जीवन के काफी करीब है।

भावनात्मक लगाव दर्शाती फिल्में : महाश्वेता देवी के लिखे बांग्ला उपन्यास पर आधारित गोविंद निहलानी के निर्देशन में बनी 'हजार चौरासी की मां' उस मां की कहानी है, जो नक्सली विचारों से प्रेरित अपने बेटे को एक पुलिस मुठभेड़ में खो देती है और उसके शव के नंबर 1084 की वजह से हजार चौरासी की मां कही जाती है। फिल्म में जया बच्चन और अनुपम खेर मुख्य भूमिका में हैं। इस फिल्म को सर्वश्रेष्ठ हिंदी फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला था। 'निल बटे सन्नाटा' एक ऐसी वंचित लेकिन सशक्त मां की कहानी है, जो अपनी बेटी के लिए बड़े-बड़े सपने देखती है।

मां के रोल में खूब किया गया इनको पसंद: फिल्मों में सहृदय ममतामयी मां की भूमिका को निरूपा राय ने इतनी शिद्दत के साथ पर्दे पर उतारा है कि आम जीवन में भी सभी सीधी-सादी मां को निरूपा राय कह कर ही पुकारा जाता है। अचला सचदेव, लीला चिटणीस और सुलोचना जैसी कुछ ऐसी अभिनेत्रियां हुई हैं, जिन्हें दर्शकों ने हमेशा मां की भूमिका में ही देखा। जब गौरवशाली और ममतामयी मां की भूमिका का उल्लेख होता है तो 'मुगले आजम' में जोधा बाई की भूमिका निभाने वाली दुर्गा खोटे का नाम भुलाए नहीं भूलता। आधुनिक फिल्मी माताओं में रीमा लागू ने एक सेलिब्रिटी मां के चरित्र को पर्दे पर उतारा है। क्रूर और सौतेली मां की भूमिका में ललिता पंवार, शशिकला और अरुणा इरानी ने नाम कमाया। कुछ अभिनेत्रियां, कुछ खास नायकों की मां के लिए रोल मॉडल बना दी गईं। कामिनी कौशल को मनोज कुमार की मां के रूप में पसंद किया गया तो रीमा लागू सलमान खान की मां के रोल में खूब पसंद की गईं। *